अगस्त–२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त–२०२१

आप्त पुरुष थे कृष्ण,
नहीं जीवन में कोई दोष।
ऋषिवर कहते कृष्ण चरित,
पावन है औ निर्दोष।
दोषारोपण जो भी करते,
उन पर आता रोष।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ११८

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक

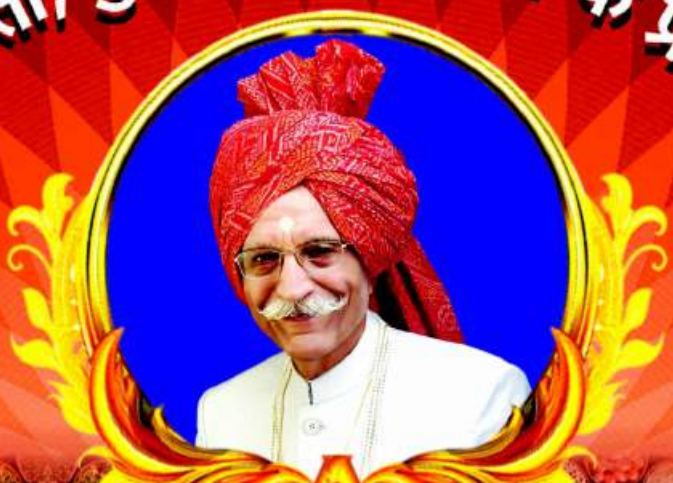

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E-mail : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD.1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

कार्यालय मंत्री
भँवर लाल गर्ग (मो. 7976271159)

श्रीकृष्ण आप्त पुरुष थे। ०५

ज्योतिष पर पौराणिक गुटर गूँ ०९

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	- 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
आषाढ कृष्ण चतुर्दशी
विक्रम संवत्
२०७८
दयानन्दाब्द
१९७

August - 2021

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४	वेद सुधा
०९	मुक्ति सम्बन्धी संक्षिप्त विवेचना
११	कर्म-फल भोग व मोक्ष
१४	समस्याओं को चुनौती समझिए!
१६	ज्योतिष- फलित असत्य है
१९	धर्मान्तरण का कुचक्र
२३	इंसानियत का गहना.... विनम्रता
२५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/२१
२६	स्वास्थ्य- प्रातः काल उठना
२७	कविता- ईश्वर-जीव-प्रकृति
३०	न्यास-समाचार

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० अंक -०४

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

द्वेष भावना को नष्ट करें।

द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय।
अप नः शोशुचदघम्।।

- अथर्ववेद ४/३३/७

हे (**विश्वतोमुख**) सब ओर मुख वाले परमात्मा (**इव**) जैसे नौका चलाने वाला नाविक (**नावा**) नौका द्वारा यात्रियों को सुखपूर्वक नदी के पार उतारता है वैसे ही आप (**नः**) हमको (**द्विषः**) द्वेष रूपी महानद के (**अति पारय**) पार उतारिए। हे प्रभु आपकी कृपा से (**नः**) हमारा (**अघम्**) पाप हमसे (**अप**) दूर होकर (**शोशुचत**) नष्ट हो जावे।

इस मंत्र में द्वेष नदी से पार उतरने का और पापों से बचने का उपदेश किया है। परमात्मा को इस मंत्र में (विश्वतोमुख) सब ओर मुख वाला नाम से स्मरण किया है। मुख शब्द से यहाँ गर्दन के ऊपर का भाग अभिप्रेत है। इस भाग में मुख्यतया आँख, कान और जिह्वा यह तीन इन्द्रियाँ अपना कार्य करती हैं इनका कार्य यथाक्रम देखना, सुनना और उपदेश देना है। अतः 'विश्वतोमुख' शब्द का अर्थ सब ओर देखने वाला सब ओर सुनने वाला तथा सब ओर उपदेश देने वाला है अर्थात् परमेश्वर सर्वत्र एक रस व्याप्त होकर सब प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों को जानता तथा उनको बुरे कर्मों से बचने का उपदेश देता है। जो व्यक्ति यह अनुभव करता है कि सर्वव्यापक प्रभु मेरे सब कर्मों को जानते हैं उनसे छुपकर मैं कहीं कोई दुष्कर्म नहीं कर सकता वह सब प्रकार के पापों से बचता है।

संसार में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जिनमें कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्धारण करना अत्यन्त कठिन होता है। उस समय सबके अन्तर्यामी भगवान प्रत्येक पुरुष के हृदय आकाश में उपदेश करते हैं कि तुझे यह कार्य करना चाहिए और यह नहीं करना चाहिए। जो पुरुष प्रभु की इस अन्तरध्वनि पर ध्यान देकर तदानुसार आचरण करते हैं वह सर्वदा पापों से बचे रहते हैं। अतः पापों से बचने के लिए इस मंत्र में सर्वतोमुख प्रभु से यही प्रार्थना की है।

द्वेष जहाँ स्वतंत्र एक महापाप है, वहाँ यह अनेक महापापों का मूल कारण भी है। द्वेष के अधीन होकर मनुष्य इस संसार में अनेक प्रकार के अकर्तव्यों को कर डालता है। अतएव इस मंत्र में मुख्यतया द्वेष रूपी महानद से पार होने के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई है। जो पुरुष जगदीश्वर को वस्तुतः विश्वतोमुख समझते हैं, वे कभी संसार में पाप कर्मों से युक्त नहीं होते।

।।ओ३म्।।
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त श्रद्धेय
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, सुदूर विदेश में सहस्रों परिवारों को सम्बल प्रदान करने वाले, निज के प्रयासों व धन से शिकागो आर्यसमाज की संस्थापना व संचालन करने वाले, आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान, इस न्यास के संरक्षक, श्रद्धेय डॉ. सुखदेव चन्द सोनी जी को उनके शुभ जन्मदिवस पर न्यास के सभी सदस्यों की ओर से मुदित मन से हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करते हुए हम हर्ष विभोर हैं। हमें आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है कि आपका वरद हस्त सदैव की भाँति न्यास को प्राप्त होता रहेगा। परमपिता परमात्मा से आपके दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं।

अशोक आर्य, अध्यक्ष एवं समस्त न्यासीगण
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, उदयपुर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर सभी आर्य सज्जनों को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

आत्म निवेदन

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विचारार्थ

श्रीकृष्ण का शत्रु कौन?

वेद वेदांग विज्ञानं बलं चाभ्यधिकं तथा।
नृणा लोके हि कोऽन्योऽस्ति विशिष्टः केशावादृते।। — महाभारत ३८-१६

श्रीकृष्ण में वेद-वेदांगों का ज्ञान तो है ही, वह भी सबसे अधिक है, श्रीकृष्ण के सिवा संसार के मनुष्यों में दूसरा कौन सबसे बढ़ कर है? (अर्थात् कोई नहीं, कृष्ण सर्वोपरि हैं)

३० अगस्त को श्रीकृष्ण जी महाराज का जन्मदिवस है। मुझे प्रायः यह विचार आता है कि जिस महापुरुष का चरित्र सारे संसार को सुशिक्षा देने में समर्थ है, जो गंगोत्री के उद्गमस्थल से निकलने वाली निर्मल धारा की भाँति पावन है, जिसमें स्नान कर मानवमात्र अपने जीवन को पवित्र बना सकता है, क्या कारण रहे होंगे कि उसके विमल चरित्र के साथ बीच के कालखण्ड में अन्याय किया गया, जिसका सहारा लेकर विधर्मियों को भोली-भाली जनता को यह कहने का अवकाश मिल जाता है कि तुम्हारे भगवान तो लम्पट थे हमारे यीशु तो अन्यों को भी पवित्र करने वाले हैं। और भोली-भाली जनता इसका उत्तर नहीं दे पाती। क्या कारण है कि विधर्मियों ने 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी' जैसी कुत्सित पुस्तक लिख डाली? क्या कारण है कि जब विदेशी कम्पनियाँ महिलाओं के अधोवस्त्रों का विज्ञापन करतीं हैं तो महात्मा कृष्ण का चित्र उनके साथ देने का कुत्सित कार्य करने में संकोच नहीं करतीं? क्या कारण है कि जब वेंडी वेनिगर भारत पर अपनी किताब लिखतीं हैं तो टाइटल पृष्ठ पर नग्न महिलाओं के ऊपर हमारे आराध्य को चित्रित कर देती हैं? क्या कारण है कि हमारे अपने उच्चतम न्यायालय ने अपने एक फैसले में एक सन्दर्भ के अन्तर्गत श्री कृष्ण तथा राधा के सम्बन्ध को 'लिव इन रिलेशन' के तौर पर उद्धृत कर दिया? क्या कारण है कि हम अपने पिता अथवा दादा के बारे में एक अपशब्द सुनने पर मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं परन्तु हमारे ही आप्त पूर्वज जिनके चरित्र में दुर्बलता का लेश भी नहीं था उनके बारे में न सिर्फ सुनते हैं वरन् स्वयं भी मंत्रमुग्ध होकर यह सब दोहराते हैं? यह सब विचार करते हुए हृदय की पीड़ा इतनी बढ़ती है कि वर्णित नहीं कर सकते, पर इसका शमन कैसे हो? जब हम कृष्ण जी महाराज पर लगाए गए मनमाने आरोपों का, सत्य इतिहास के प्रकाश में खण्डन करने की चेष्टा करते हैं तो हम पर आरोप लगता है कि हम तो कृष्ण को मानते ही नहीं।

यह कैसा विचित्र तमाशा है कि हम आर्यजन, हमारे उपदेशक, भजनोपदेशक, जो महर्षि दयानन्द जी महाराज के शब्दों में यह कहते हैं कि- 'श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा', तो हमें कृष्ण का दुश्मन मान लिया जाता है और जो ताल में ताल मिला कृष्ण पर आक्षेपात्मक कथन करते हैं उन पर मुग्ध होकर पुष्प बरसाए जाते हैं। यह स्थिति निराश कर देने वाली है। पर प्रयास करना, भगवान श्री राम और कृष्ण के पावन चरित्र से अधिकाधिक जनों को अवगत कराते रहना हमारा धर्म है और इस आलेख में हम वही कार्य कर रहे हैं, और भविष्य में भी करते रहेंगे।

वास्तव में कृष्ण जैसे महान् योगी पुरुष को कलंकित करने के पीछे ढोंगियों और भोगियों की एक 'विशेष' श्रेणी का ही हाथ है जिन्होंने अपनी वासनाओं की तुष्टि के लिए वो सारी अनर्गल बातें कृष्ण से जोड़ दीं जो उनके विकृत मस्तिष्क में उपस्थित थीं, और उन रचनाओं के रचयिता के रूप में भगवान वेदव्यास को प्रसिद्ध किया ताकि उनकी गन्दी रचनाएँ भी मान्य हो जायँ। भागवत और ब्रह्मवैवर्त पुराण में उनके रचयिताओं (वेदव्यास नहीं) ने साशय ऐसा किया। प्रमाणस्वरूप ब्रह्मवैवर्त से एक प्रकरण यहाँ दे रहे हैं उसका भी हिन्दी अनुवाद नहीं।

इस पुराण के प्रकृतिखण्ड के कुछ श्लोक देखिये-

करे घृत्वा च तां कृष्णः स्थापयामास वक्षसि। चकार शिथिल वस्त्रं चुम्बन च चतुर्विधम् ।।
बभूव रतियुद्धेन विच्छिन्नां क्षुद्रघण्टिका। चुम्बननोष्ठेंरागश्च ह्याश्लेषेण च पत्रकम् ।।
मूर्छामवापसा राधा बुपुधेन दिवानिषम् ।।

मर्यादा का अतिलंघन होने के कारण आर्यभाषा में इसका अर्थ नहीं दे रहे परन्तु पाठक आशय समझ ही लेंगे ऐसा विश्वास है।

अब प्रार्थना के नाम पर जो कृष्ण भक्ति की जाती है उसकी भी एक बानगी देख लीजिये।

भीजत सांवरे के रंग गोरी,
अरस-परस बातन रस भीनी, बाँह-बाँह में जोरी।
कदम तरे ठाड़े दौऊ, ओढ़े एक ही पीत पिछौरी,
चुवत रंग अंग वसन लिपट, रहे भीज-भीज दौऊ ओरी।
जल-कल सृवत संग पगि पलकन, करत जुगल चितचोरी,
गावत हंसत रिझावत हिल-मिल, पुनि-पुनि भरत अंकोरी।।

जब हमारे अपने कृष्ण भक्त कहे जाने वाले लोगों का यह हाल था तो विधर्मियों को तो मानो कृष्ण-निन्दा का खजाना मुफ्त में प्राप्त हो गया। उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण की जी भरकर छीछालेदर की और आज भी इससे बाज नहीं आते।

फिल्मी गीतों की बात करें तो प्रायः सभी में कृष्ण की छवि आधुनिक प्लेबॉय की बना रखी है और यह सब हमारे भारत में हो रहा है। आज जन्माष्टमी का मतलब अब केवल मटकी फोड़ रह गया है। कृष्ण के पावन चरित्र की कथा केवल आर्यसमाज मन्दिरों तक सीमित रह गयी है।

भगवान् श्रीकृष्ण का वास्तविक चरित्र क्या था? वह पुराणों द्वारा दर्शाया गया तो कदापि नहीं था, यह दर्शाने हेतु हम आदरणीय पाठकों के चिन्तन हेतु राजसूय यज्ञ से कुछ प्रकरण यहाँ दे रहे हैं, जिनमें हम यह दिखाने का प्रयत्न करेंगे कि जिस शिशुपाल के कठोर वचनों तथा पूर्व के अपराधों के कारण भगवान कृष्ण ने उसका वध कर दिया उस शिशुपाल ने भी कृष्ण के चरित्र की वह छीछालेदर नहीं की, जैसी कि उनके भक्त कहे जाने वाले सज्जनों ने की है। शिशुपाल का सिर उड़ा देने वाले भगवान श्रीकृष्ण आज अगर आ जायँ तो वे इन भक्तों के साथ क्या व्यवहार करेंगे इसका अनुमान लगाना अधिक कठिन नहीं है।

श्री कृष्ण को जब अग्रपूजा का अधिकारी मान लिया गया तो यह शिशुपाल से सहन नहीं हुआ। यहाँ पर महाभारत के ३७वें अध्याय में वर्णित शिशुपाल के उन आक्षेपों का वर्णन किया है जो उन्होंने योगीराज श्री कृष्ण महाराज पर लगाए।

विशेष बात यह है कि शिशुपाल की मुख्य आपत्ति इस बात को लेकर थी कि कृष्ण जब कहीं के राजा नहीं हैं तो राजसूय यज्ञ में इतने सारे राजाओं के रहते उनकी पूजा करना सभी राजाओं का अपमान करने के बराबर है। इस क्रम में वह भीष्म आदि सभी लोगों को कटु वचन कहता है, जिन्होंने श्री कृष्ण को अर्घ्य देने का निर्णय किया। उसके अनुसार कृष्ण राजा नहीं हैं, कृष्ण सर्वाधिक वयोवृद्ध नहीं हैं, कृष्ण पाण्डवों के निकटस्थ सुहृद नहीं हैं, कृष्ण भीष्म की तरह स्वच्छन्द मृत्यु प्राप्त नहीं हैं, कृष्ण सम्पूर्ण शास्त्र के निपुण विद्वान् नहीं हैं इत्यादि-इत्यादि, अतः कृष्ण की आराधना नहीं हो सकती। यहाँ यह बात रेखांकित करने वाली है कि उपरोक्त आरोपों में कहीं भी कृष्ण के चरित्र पर अंगुली शिशुपाल जैसे दुश्मन ने भी नहीं उठाई।

आगे शिशुपाल सीधे कृष्ण को लक्ष्य कर कटुवचन कहता है और अपशब्द भी निकालता है। उनको कुन्ती का डरपोक कायर पुत्र कहता है, यहाँ तक कि कुत्ते की उपमा देते हुए श्लोक २७ में कहता है- जैसे कुत्ता एकान्त में छूकर गिरे हुए थोड़े से हविष्य (घृत) को चाट ले और अपने को धन्य-धन्य मानने लगे उसी प्रकार तुम (श्रीकृष्ण) अपने लिए अयोग्य पूजा स्वीकार करके

अपने आप को बहुत बड़ा मान रहे हो। वह आगे इसी अध्याय के २९वें श्लोक में कहता है- 'मधुसूदन! जैसे नपुंसक का ब्याह रचाना और अन्धे को रूप दिखाना उनका उपहास ही करना है, उसी प्रकार तुम (अर्थात् श्रीकृष्ण) जैसे राज्यहीन की राजाओं के समान पूजा भी विडम्बना मात्र है।'

इस पर श्री भीष्म उसके आक्षेपों का उत्तर देते हैं।

३८वें अध्याय से केवल कुछ एक प्रसंग हम उपस्थित कर रहे हैं जिससे श्री कृष्ण महाराज का उनके समकालीन लोगों के मध्य कैसा चरित्र प्रकट था, कैसा सम्मान था यह स्पष्ट हो सके। महाभारत के अध्याय ३८वें के श्लोक १२वें में भीष्म कहते हैं- मैंने बहुत से ज्ञानवृद्ध महात्माओं का संग किया है, अपने यहाँ पधारे हुए उन सन्तों के मुख से अनन्त गुणों वाले भगवान श्री कृष्ण के सन्त बहुसम्मत गुणों का वर्णन सुना है। इससे यह स्पष्ट है कि न केवल राजसूय यज्ञ में उपस्थित लोगों के मध्य वरन् उस काल में जो बुद्धिमान पुरुष थे उनके मध्य श्री कृष्ण का चरित्र अत्यन्त पावन और पवित्र था। इसीलिए भीष्म कह पाते हैं कि जन्म काल से लेकर अब तक इन बुद्धिमान कृष्ण के जो-जो चरित्र बहुधा बहुतेरे मनुष्यों द्वारा कहे गए हैं उन सब को मैंने बार-बार सुना है। भीष्म आगे कहते हैं हम इनके यश, शौर्य और विजय को भली-भाँति जानकर इनकी पूजा कर रहे हैं। यहाँ बैठे हुए लोगों में से कोई छोटा बालक भी ऐसा नहीं है जिसके गुणों की हम लोगों ने पूर्णतः परीक्षा न की हो अर्थात् भीष्म इस बात को जोर देकर के कह रहे हैं कि इस सभा में बैठे प्रत्येक व्यक्ति के गुण-अवगुण का उन्होंने भली प्रकार परीक्षण कर लिया है और उन में सर्वश्रेष्ठ श्री कृष्ण को पाया है, उनके चरित्र में लेश मात्र भी न्यूनता उन्हें दिखाई नहीं पड़ती, इसी से उन्होंने श्री कृष्ण को अर्घ्य के हेतु चुना है।

शिशुपाल के आक्षेपों का उत्तर देते हुए १७वें श्लोक में भीष्म कहते हैं- ब्राह्मणों में वही पूजनीय समझा जाता है जो ज्ञान में बड़ा हो तथा क्षत्रियों में वही पूजा के योग्य है जो बल में सबसे अधिक हो, वैश्यों में वही सर्वमान्य है जो धन-धान्य में बढ़चढ़ कर हो, केवल शूद्रों में अवस्था से माननीय माना जाता है। श्री कृष्ण के पूजनीय होने में यह सभी कारण विद्यमान हैं। इनमें वेद वेदांगों का ज्ञान तो है ही, बल भी सबसे अधिक है। श्री कृष्ण के सिवाय संसार के मनुष्यों में दूसरा कौन सबसे बढ़कर है? आगे भी जो-जो महात्मा कृष्ण के बारे में कहते हैं वह हृदयंगम करने योग्य है। वे कहते हैं- दान, दक्षता, शास्त्र ज्ञान, शौर्य, लज्जा, कीर्ति, उत्तम बुद्धि, विनय, श्री, धृति, तुष्टि और पुष्टि यह सभी सद्गुण भगवान श्री कृष्ण में नित्य विद्यमान हैं। श्री कृष्ण हमारे ऋत्विक्, गुरु, आचार्य, स्नातक, राजा और प्रिय मित्र सब कुछ हैं। इस प्रकार उपरोक्त वक्तव्य से भीष्म शिशुपाल के सभी आक्षेपों का उत्तर दे देते हैं।

यहाँ हम पाठकों को यह भी बतलाना चाहेंगे कि महाभारत के ३८वें अध्याय में संक्षेप में कृष्ण के बाल तथा किशोर जीवन की चर्चा की गई है जिनमें कृष्ण के बल के अनेक कारनामे लिखित हैं परन्तु बाद के काल में जो श्री कृष्ण भगवान के चरित्र को दूषित करने वाले अनेक प्रकरण भागवत आदि पुराण में जोड़ दिए गए हैं, ब्रह्मवैवर्त में विस्तार से वही दिए गए हैं, ऐसा एक भी संकेत महाभारत के इस स्थल पर नहीं मिलता। इससे स्पष्ट होता है यह सब बाद के प्रक्षिप्त स्थल हैं जो कृष्ण चरित्र की आड़ में अपनी रासलीला रचाने के उद्देश्य से वाममार्गी मानसिकता के लोगों ने कृष्ण के चरित्र के साथ जोड़ें।

गोपियों के साथ रास, नग्न स्नान करती गोपियों के वस्त्र उठाकर पेड़ पर चढ़ जाना फिर उनसे अपने हाथ उठाकर बाहर निकलने को कहना तथा कल्पित राधा के साथ नाना प्रकार की शृंगारमूलक कल्पनाएँ करना अथवा कुब्जा के साथ रमण की

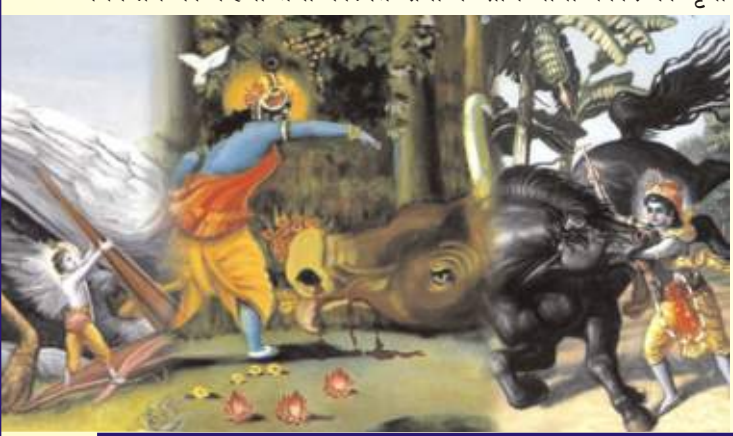

कहानियाँ, यह सब उन्हीं मानसिक रूप से विकृत व्यक्तियों का कार्य है। अन्यथा महाभारत के उपरोक्त प्रसंग से यह स्पष्ट है कि उनके समय में जितने भी लोग थे चाहे वे उनके घोर विरोधी रहे हों वे भी कृष्ण पर इस प्रकार का कोई आरोप नहीं लगा सके।

इसी प्रसंग में हम देखते हैं कि शिशुपाल आगे श्री कृष्ण पर आरोप लगाता है और भीष्म से कहता है कि कृष्ण जैसे ग्वालिये की, तुम ज्ञान वृद्ध होकर स्तुति करना चाहते हो यह आश्चर्य का विषय है। भीष्म तुम्हारे अनुसार इसने अर्थात् कृष्ण ने बचपन में एक पक्षी

बकासुर को एक सुकेशी को एक वृषभ अरिष्टासुर को मार ही डाला तो इसमें आश्चर्य की क्या बात हो गई? जहाँ तक छकड़ा उलटने की बात है तो उसमें कौन सी अनोखी करामात इसने कर डाली? ढाक के पौधों के बराबर दो अर्जुन के वृक्षों को यदि कृष्ण ने गिरा दिया अथवा एक नाग को मार दिया तो कौन से बड़े आश्चर्य का काम कर दिया? जहाँ तक गोवर्धन पर्वत को उठाने की बात है सो गोवर्धन तो दीमकों की खुदी हुई मिट्टी का ढ़ेर है इसमें आश्चर्य क्या है? फिर आगे बोला कि जिस महाबली कंस का अन्न खाकर यह पला था उसी को इसने मार डाला। (अर्थात् यह कृतघ्नी है) आगे शिशुपाल कृष्ण को गो-घातक और स्त्री-हंता बताते हुए उनके स्तुति के अधिकार पर प्रश्नचिह्न लगाता है। वह जरासंध वध के लिए कृष्ण को दोषी ठहराता है, जरासंध को धर्मात्मा बताता है।

अब तक इस प्रकरण में एक भी बार शिशुपाल ने कृष्ण पर चारित्रिक दोषारोपण नहीं किया। जब शिशुपाल ने कृष्ण को युद्ध के लिए ललकारा तब कृष्ण ने शिशुपाल के बारे में, भूतकाल में उससे जो अपराध हुए थे, उनकी चर्चा की, उसमें विशेष रूप से शिशुपाल की चारित्रिक दुर्बलता का भी वर्णन है। वे कहते हैं कि इस क्रूरकर्मा ने अपने असली रूप को छिपाकर करूषराज की प्राप्ति के लिए तपस्या करने वाली, अपने मामा विशाला नरेश की कन्या भद्रा का अपहरण कर लिया।

श्री कृष्ण महाभारत के ४५वें अध्याय के दशवें श्लोक में कहते हैं- इसने तपस्वी वभ्रु की पत्नी का जो यहाँ से द्वारका जाते समय सौवीर देश पहुँची थी और इसके प्रति जिसके मन में तनिक भी अनुराग नहीं था मोहवश अपहरण कर लिया। इस प्रकार आप देखेंगे कि श्रीकृष्ण ने भरी सभा में शिशुपाल के दुष्चरित्र का वर्णन करते हुए स्पष्टतः चारित्रिक आक्षेप भी लगाए। तो क्या फिर भी कोई ऐसा व्यक्ति होगा कि ऐसे आक्षेप लगाने वाले व्यक्ति के अन्दर अगर कोई चारित्रिक दुर्बलता है तो अब तक ना कहा हो सो अलग परन्तु अब तो पलट कर यह कहता ही कहता कि तू मेरी क्या बात कर रहा है तू अपने चरित्र को देख। तूने गोपियों के साथ यह किया, तूने कुब्जा के साथ यह किया, तूने राधा के साथ यह किया इत्यादि-इत्यादि। परन्तु शिशुपाल ने ऐसा कुछ भी नहीं कहा न उसके समर्थक राजाओं ने इस प्रकार के कोई आक्षेप लगाए।

तब जाकर जबकि शिशुपाल ने युद्ध का आह्वान किया श्री कृष्ण ने कहा- यहाँ बैठे हुए सभी महीपाल यह सुन लें कि मैंने क्यों अब तक इसके अपराध क्षमा किए हैं। इसी की माता के याचना करने पर मैंने उसे यह वचन भर दिया था कि शिशुपाल के १०० अपराध क्षमा कर दूँगा। राजाओं वे सब अपराध अब पूरे हो गए हैं अतः आप सभी भूमिपतियों के देखते-देखते मैं अभी इसका वध किए देता हूँ और इस प्रकार शिशुपाल का अन्त हुआ।

पाठकगण! भगवान श्रीकृष्ण के पावन जीवन की पवित्रता को प्रमाणित करने का यह एक लघु प्रयास है। आशा करते हैं आप इस पर विचार अवश्य करेंगे। वरना इण्टरनेट पर तो ऐसी सामग्री का भण्डार है जिनका उद्देश्य ही श्री कृष्ण के जीवन को कलंकित करना है और आप उसका खण्डन पुराणों के आधार पर कदापि नहीं कर पायेंगे।

आयें हम सभी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाएँ और गीता के श्लोक को सदैव स्मरण रखें-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।

- श्रीमद्भागवद्गीता १८-७८

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के निर्वाचन सम्पन्न

संरक्षक मंडल

डॉक्टर सुखदेव चन्द्र सोनी; शिकागो, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती; सीकर, श्री सुरेश चन्द्र आर्य; अहमदाबाद, श्री दीनदयाल गुप्त; कोलकाता, श्री बीएल अग्रवाल; जयपुर

अध्यक्ष	:	श्री अशोक आर्य; उदयपुर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	श्री विजय शर्मा; भीलवाड़ा
उपाध्यक्ष	:	श्री मोतीलाल आर्य; आबू रोड़
मंत्री	:	श्री भवानी दास आर्य; उदयपुर
संयुक्त मंत्री	:	डॉक्टर अमृतलाल तापड़िया; उदयपुर
कोषाध्यक्ष	:	श्री नारायण लाल मित्तल; उदयपुर

सदस्य कार्यकारिणी

श्रीमती शारदा गुप्ता; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री विनीत आर्य; अहमदाबाद, श्री महेश गोयल; किरतपुर, श्री विजय सिंह भाटी; जोधपुर

मुक्ति सम्बन्धी संक्षिप्त विवेचना

खुशहाल चन्द्र आर्य

मुक्ति का अर्थ तथा साधन– महर्षि दयानन्द के आने से पहले मुक्ति का अर्थ सदैव के लिए जीवन मरण मुक्ति पा लेना था, यानि मुक्त जीव सदैव के लिए ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आनन्द प्राप्त करेगा, ऐसा माना जाता था। इस मान्यता के अनुसार मुक्त जीव फिर धरती पर न आकर हमेशा के लिए मोक्ष प्राप्त कर लेता था और अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आनन्द प्राप्त करता रहता था। परन्तु महर्षि ने वेदों को पढ़कर बताया कि मोक्ष प्राप्ति अपने पूरे जीवनभर अच्छे परोपकारी कार्यों का फल है। यदि अच्छे, परोपकारी कार्यों को करने की एक सीमित अवधि है तो फल की अवधि भी निश्चित ही होनी चाहिए, चाहे वह अवधि कितनी भी बड़ी हो परन्तु अवधि निश्चित ही होगी। इसी के आधार पर महर्षि जी ने वेदों से जानकर मुक्ति की अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्षों की बताई है। यानि ३६ हजार बार सृष्टि निर्माण व प्रलय होने तक की बताई है। एक सृष्टि की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष की होती है और प्रलय की भी आयु उतनी ही होती है। इसलिए एक सृष्टि और एक प्रलय की आयु ८ अरब ६४ करोड़ वर्ष हुई। इसको यदि हम ३६००० से गुणा करेंगे तो ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष की हो जायेगी। यह बात महर्षि दयानन्द ने बताई है।

महर्षि दयानन्द ने मोक्ष का अर्थ बताया है दुःखों से छूटकर सुख को प्राप्त होना और ब्रह्म में आनन्द के साथ मुक्ति की अवधि तक विचरण करना। इसके उपरान्त फिर जन्म लेकर पहले की भाँति ही जन्म मृत्यु के चक्कर में ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार योनियों में घूमकर पुनः मनुष्य की योनि में आकर फिर से जीवन भर अच्छे परोपकारी कर्म करके पुनः मुक्ति में जाना।

मुक्ति के पाने का साधन हैं– पहला ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए यानि वेदानुकूल चलते हुए अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार और बुरे व्यसनों से अलग रहते हुए सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय और धर्म की वृद्धि करना है। दूसरा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करते हुए योगाभ्यास करना इत्यादि उत्तम साधनों से मुक्ति प्राप्त होती है।

मुक्ति में जीव की अवस्था– मुक्ति में जीव का ईश्वर में लय नहीं होता बल्कि वह अलग विद्यमान रहता है और स्वेच्छाचारी होकर बिना रुकावट आनन्दपूर्वक सर्वत्र विचरता है। मुक्ति में जीव का स्थूल शरीर नहीं रहता उसका सत्य संकल्प शरीर रहता है। वह जीव अपनी इच्छा मात्र से सब सुख व आनन्द भोग लेता है। वह अत्यन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता हुआ, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता है। अन्य मुक्ति जीवों के साथ मिलता तथा सृष्टि विद्या के क्रम में देखता हुआ सब लोक-लोकान्तरों में अर्थात् जितने लोक प्रत्यक्ष दिखते हैं तथा जो नहीं दिखते उन सब में भी घूमता रहता है। जिस जीवात्मा का जितना ज्ञान अधिक होता है मुक्ति में उसको उतना ही आनन्द भी अधिक आता है। यही सुख विशेष स्वर्ग और विषय तृष्णा में फंसकर दुःख भोग करना नरक कहलाता है।

मुक्ति से लौटना– कुछ लोग 'न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते' (छान्दोग्योपनिषद्) 'अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात्' (वेदान्त दर्शन) इन प्रमाणों के आधार पर ऐसा कहते

हैं कि मुक्ति के पश्चात् जीव पुनः संसार में नहीं आता। परन्तु यह अर्थ ठीक नहीं है। इसका सही अर्थ यही है कि मुक्ति के परान्तकाल पूर्व ये नहीं लौटते। महाकल्प के पश्चात् तो लौटते ही हैं। वेद में कहा है-

अग्रेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च॥

- ऋग्वेद १/२४/२

इस प्रकाशस्वरूप आनन्द तथा सदा मुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें। जो हमें मुक्ति में आनन्द भुगाकर पृथ्वी में पुनः

माता-पिता के द्वारा जन्म देकर माता-पिता का दर्शन कराता है। इस प्रमाण से स्पष्ट है कि मुक्ति के पश्चात् भी जीव लौटता है।

मुक्ति से लौटने के प्रमाण- मुक्ति से लौटने के निम्न प्रमाण हैं-

१. जीव का सामर्थ्य, शरीरादि पदार्थ और साधन सीमित हैं, पुनः उनका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन जीवों में नहीं इसलिए अनन्त सुख नहीं भोग सकते। जिनके साधन अनित्य हैं, उनका फल नित्य कभी नहीं हो सकता।

२. यदि मुक्ति से लौटकर कोई भी जीवात्मा संसार में न आये तो शनैः-शनैः संसार का उच्छेद अर्थात् जीवों की समाप्ति हो जायेगी।

३. यदि यहाँ यह कहा जाये कि जितने जीव मुक्त होते हैं, ईश्वर उतने ही नये जीव बना लेता है तो भी ठीक नहीं। ऐसा होने पर जीव अनित्य हो जायेंगे, क्योंकि जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका नाश भी अवश्य होता है। मुक्ति पाकर भी वे नष्ट हो जायेंगे और मुक्ति अनित्य हो जायेगी।

४. यदि मुक्ति से लौटते नहीं तो मुक्ति के स्थान पर बहुत भीड़-भड़क्का हो जायेगा क्योंकि वहाँ आगम अधिक व्यय कुछ भी न होने से बढ़ती का पारावर न रहेगा।

५. सुख का अनुभव सापेक्ष अनुभव है। दुःख के अनुभव के बिना सुख का अनुभव नहीं हो सकता। जैसे कटु न हो तो मधुर क्या और मधुर न हो तो कटु क्या कहावे, क्योंकि एक स्वाद के एक रस के विरुद्ध होने से दोनों की परीक्षा होती है। जैसे कोई मनुष्य मीठा ही मीठा खाता जाये तो उसको वैसा सुख नहीं होता। जैसा सब प्रकार के रसों को भोगने वाले को होता है।

६. यदि ईश्वर अन्त वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो उसका न्याय नष्ट हो जाये। जो जितना भार उठा सके उस पर उतना ही धरना बुद्धिमानी का काम है। जैसे एक मन भार उठाने वाले के सिर पर दस मन और धरने से, भार धरने वाले की निन्दा होती है, वैसे ही अल्पज्ञ, अल्पसामर्थ्य वाले जीव पर अनन्त सुख का भार धरना ईश्वर के लिए ठीक नहीं।

७. यदि परमेश्वर नये जीव उत्पन्न करता है तो जिस कारण से वे जीव उत्पन्न होते हैं वह कारण चुक जायेगा, क्योंकि चाहे कितना ही बड़ा कोश हो जिसमें व्यय है आय नहीं उसका कभी न कभी दिवाला निकल ही जायेगा।

८. यदि मुक्ति से पुनरावृत्ति नहीं होती तो वह जन्म कारागार के समान हो जायेगी, बस इतना ही अन्तर रहेगा कि वहाँ मजदूरी नहीं करनी पड़ेगी।

मुक्ति के लिए उपाय आवश्यक- मुक्ति से भी लौटना पड़ता है। परन्तु मुक्ति जन्म-मरण के सदृश नहीं है क्योंकि जब तक ३६००० बार सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय होती है इतने समय पर्यन्त जीवों का मुक्ति के आनन्द में रहना और दुःखी न होना क्या छोटी बात है? यह समय कोई कम है कि इतने काल तक निरन्तर सुख में रहने के लिए प्रयत्न न किया जाये। जब आज खाते-पीते हैं और कल भूख लगने वाली है फिर भी उपाय किया ही जाता है। जब भूख-प्यास, धन, राज्य, प्रतिष्ठा, स्त्री, सन्तान आदि के लिए उपाय करना आवश्यक है तो मुक्ति जो सृष्टि की अवधि ४ अरब ३२ करोड़ की और प्रलय की ४ अरब ३२ करोड़ का कुल ८ अरब ६४ करोड़ के होते हैं उनको ३६००० (छत्तीस हजार) से गुणा करने से ३१ नील १० खरब ४० अरब की होती है उसके लिए क्यों न उपाय किया जावे? जैसे मरना आवश्यक है फिर भी जीने का उपाय किया जाता है, वैसे ही मुक्ति से लौटकर जन्म में आना है तथापि उसका उपाय करना भी अत्यावश्यक है।

गोविन्दराम एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड
दो तल्ला, कोलकाता- ७००००७

वेद मनुष्य जन्म का कारण कर्म-फल भोग व मोक्ष प्राप्ति बताते हैं

हम मनुष्य के रूप में जन्मे व जीवन जी रहे हैं परन्तु हमें यह पता नही होता कि हमारा जन्म क्यों हुआ तथा हमें करना क्या है? संसार के अधिकांश व प्रायः सभी मनुष्यों की यही स्थिति है। इस प्रश्न का उत्तर केवल वेद व वैदिक साहित्य से ही प्राप्त होता है जो ऋषि दयानन्द सरस्वती (१८२५-१८८३) ने धर्म साहित्य का अनुसंधान करके हमें बताया है। ऋषि दयानन्द सत्य धर्म की खोज करते हुए वेदों के मर्म तक पहुँचे थे। उन्हें विदित हुआ था कि वेद ही संसार में ज्ञान के आदि स्रोत हैं। यह वेद चार हैं जिन्हें हम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के नाम से जानते हैं। इन वेदों की उत्पत्ति सृष्टि के आदि काल में हुई थी। प्राचीन वैदिक साहित्य के शब्दकोश के अनुसार वेद ज्ञान को कहते हैं। वेदों का यह ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में इस जगत् के उत्पत्तिकर्ता सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अमैथुनी सृष्टि करके उसमें उत्पन्न चार ऋषि कोटि की पवित्र आत्माओं, जिन्हें अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा के नाम से जाना जाता है, उनकी आत्माओं में जीवस्थ स्वरूप से आत्मा में प्रेरणा करके प्रदान किया था।

ऋषियों एवं वैदिक धर्मियों ने उस वेद ज्ञान को आज १ अरब ९६ करोड़ से अधिक अवधि व्यतीत हो जाने पर भी पूर्णतः सुरक्षित रखा है तथा उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन व मिलावट नहीं होने दी है। परमात्मा से प्राप्त इस वेद ज्ञान को कालान्तर में संहिता व पुस्तक का रूप दिया गया था। आज यह हमें पुस्तक रूप में उपलब्ध होता है। चार वेदों में कुल २०३४९ मन्त्र हैं जो सभी पूर्णतः शुद्ध अवस्था में हमें प्राप्त हैं। इतना ही नहीं इन सब मन्त्रों के संस्कृत व हिन्दी अर्थों सहित इनके अंग्रेजी व अन्य कुछ भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध होते हैं। वेदों को ज्ञान का भण्डार बताया जाता है जो कि सत्य है। वेदाध्ययन कर वैदिक ऋषियों ने वेदों को सब सत्य विद्याओं का भण्डार व पुस्तक घोषित किया है। ऋषि दयानन्द ने अपनी पुस्तक 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' तथा वेदभाष्य करके इस मान्यता को पुष्ट किया है। वेद में मनुष्यों के जानने योग्य सभी प्रकार का शंकाओं से रहित तथा सृष्टि क्रम के अनुरूप व ज्ञान-विज्ञान से युक्त ज्ञान उपलब्ध होता है। ऋषि दयानन्द वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् थे। उन्होंने अपने अध्ययन व प्राचीन ऋषि परम्पराओं के अनुसार वेदाध्ययन व वेदाचरण को सभी मनुष्यों का परमधर्म अर्थात् कर्तव्य पालन का आचार शास्त्र घोषित किया है। वेद मनुष्य को सत्य का ग्रहण एवं असत्य का त्याग करने सहित सत्य को जीवन में धारण करने तथा सत्य का ही आचरण करने का उपदेश देते हैं। वेद संसार के सभी ग्रन्थों में सबसे अधिक प्राचीन तथा ज्ञान व विज्ञान पुष्ट मान्यताओं से युक्त ज्ञान सिद्ध होता है जिसका अध्ययन किये बिना मुनष्य का जीवन अपने उद्देश्य में सफल नहीं होता और न ही उसे अपना लक्ष्य आनन्द से युक्त मोक्ष जिसे अमृत कहा जाता है, प्राप्त होता है।

वेदाध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि संसार में ईश्वर, जीव तथा प्रकृति अनादि व नित्य हैं। इनकी कभी उत्पत्ति नहीं हुई और न ही इनका कभी विनाश व अभाव होता है व होगा। यह तीनों पदार्थ अनादि काल से, जिसकी मनुष्य गणना नहीं कर सकते, विद्यमान हैं। ईश्वर सत्य-चित्त-आनन्द स्वरूप वाली सत्ता है। यह निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र तथा सृष्टिकर्ता है। यह ईश्वरीय सत्ता सृष्टि को उत्पन्न करने व इसकी रचना करने के साथ इसमें विद्यमान अनन्त संख्या वाले जीवों को उनके पूर्वजन्मों में किये हुए कर्मों का सुख व दुःखरूपी फल देने के लिये नाना योनियों में जन्म देता है। संसार में अनेक व अगणित योनियाँ हैं जिनमें से एक मनुष्य योनि भी होती है। मनुष्य योनि उभय योनि होती है तथा इतर सभी योनियाँ सुख व दुःख का भोग करने वाली योनियाँ होती हैं।

मनुष्येतर पशु-पक्षी आदि भोग योनियों में कोई जीव वा प्राणी अपने विवेक व ज्ञानपूर्वक सद्कर्म व पुण्यकर्म करके कर्मों का संचय नहीं करता। उसे जो भी सुख व दुःख प्राप्त होते हैं

वह सब उसके पूर्वजन्मों के कर्मों के आधार पर प्राप्त होते हैं। मनुष्य योनि उभय योनि होती है जिसमें मनुष्य अपनी बुद्धि को ज्ञान से युक्त कर तथा उससे विचार कर सत्य व असत्य का निश्चय कर कर्मों को करता है। कुछ सुख व दुःख उसे उसके पूर्वजन्मों के आधार पर प्राप्त होते हैं और कुछ इस जन्म के क्रियमाण कर्मों के आधार पर मिलते हैं। कुछ कर्म ऐसे भी होते हैं जो संचित कर्म बनते हैं जिनका फल उसे मृत्यु के बाद परजन्म व भावी जन्मों में प्राप्त होता है। मनुष्य के सुख व दुःख का आधार उसके पाप व पुण्य रूपी कर्म होते हैं। पाप कर्मों का फल दुःख तथा पुण्य व शुभ कर्मों का फल सुख होता है। इस कारण से मनुष्यों को बहुत ही विचार कर केवल शुभ व पुण्य कर्मों को ही करना चाहिये जिससे उसे जीवन में दुःख प्राप्त न हों। वैदिक धर्मी अपना जीवन इस सिद्धान्त का पालन करते हुए व्यतीत करने की चेष्टा करते हैं। ऐसा ही हमारे वैदिक धर्मी पूर्वज व ऋषि आदि करते आये हैं। आज भी ईश्वर की यह कर्मफल व्यवस्था संचालित है व अपने आदर्श रूप में विद्यमान है। हम व संसार का कोई भी प्राणी अपने अपने जीवनों में दुःख नहीं चाहता। अतः सभी को जीवन में कोई भी अशुभ, असत्य तथा पाप सम्बन्धी कर्म नहीं करना चाहिये और सद्कर्म, पुण्य व शुभ कर्मों को करके सुखों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने चाहिये। ऐसा करने से हमारा मनुष्य जन्म लेना सार्थक होता है। ईश्वर से इतर जीवात्मा एक अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, सत्य व चित्त स्वरूप वाली सत्ता है। जीवात्मा ज्ञान व कर्म करने की सामर्थ्य से युक्त होती है। जन्म होने पर ही आत्मा की यह क्षमता व सामर्थ्य इसमें आती है। जीवात्मा अनादि व नित्य, अमर व अविनाशी, जन्म-मरण धर्मा है। इसके जन्म का आधार कर्म हुआ करते हैं। संसार में जीवात्माओं की संख्या अनन्त है। इन आत्माओं की गणना नहीं की जा सकती परन्तु सर्वज्ञ ईश्वर के ज्ञान में यह सीमित हैं। यह जीवात्मा हम व हमारे समान सभी मनुष्य व इतर प्राणी में हैं। मनुष्य जन्म व इतर जन्मों में सब प्राणियों को अपने पूर्वजन्मों के किये हुए कर्मों के फलों का भोग करना होता है। मनुष्य योनि में मनुष्य कर्म भोग भी करता है और नये कर्मों को भी करता है। वेद मनुष्यों को सद्कर्म वा पुण्य कर्मों को करने की प्रेरणा करते हैं।

वेदों में मनुष्यों के लिए पंचमहायज्ञों व कर्तव्यों का पालन करने का विधान है जिन्हें ईश्वर का ध्यान वा संध्या, देवयज्ञ अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेवयज्ञ कहते हैं। असत्य व अशुभ कर्मों के त्याग तथा सत्य व वेदविहित कर्मों का सेवन करने से ही मनुष्य को सुख-दुःखी रूपी मनुष्य आदि जन्मों से अवकाश मिलता है। इसे ही मोक्ष कहा जाता है। यह मोक्ष परमात्मा की कृपा व जीवात्मा के कर्मों के आधार पर मिलता है। मोक्ष में जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहता है। उसे परमात्मा से अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त

होती हैं। वह पूरे ब्रह्माण्ड में कही भी आ जा सकता है। ईश्वर के सान्निध्य से मुक्त जीवात्मा को अखण्ड सुख व आनन्द की प्राप्ति होती है। इस अमृत व मोक्ष को प्राप्त करने के लिये ही हमारे सभी ऋषि मुनि व विद्वान् वेदानुसार ज्ञान व कर्म की साधनायें किया करते थे और बहुत ही सामान्य व साधारण कष्टदायक जीवन व्यतीत करते थे।

सभी ऋषि मुनि व मुमुक्षुजन परोपकार तथा सत्कर्मों को ही किया करते थे। आज भी बहुत से वैदिकधर्म के अनुयायी यही कर्म व कार्य करते हैं जिनसे उनकी श्रेष्ठ गति व आत्मा की उन्नति होती है। प्रकृति जड़ पदार्थ है जो हमारी इस सृष्टि का उपादान कारण है। इसी से परमात्मा ने इस संसार की रचना की है। हमें इन तथ्यों को जानना चाहिये और अपने जीवन को दुःखों की निवृत्ति सहित अमृत व आनन्द की प्राप्ति के लिये वैदिक धर्म के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के साधनों व आचरणों को करना चाहिये। मनुष्य के लिये प्राप्तव्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष ही हैं। यदि हम इस जन्म का सदुपयोग करते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिए कार्य नहीं करेंगे तो हमारा मनुष्य जन्म लेना व्यर्थ सिद्ध होगा और इसके परिणाम से हमें परजन्म में अनेक दुःखों को भोगना पड़ सकता है।

-मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चूक्खूवाला-२, देहरादून- २४८००१ (उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☛ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।

☛ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।

☛ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।

☛ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।

☛ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।

☛ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

☛ वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।

☛ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।

(अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

(ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

(स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

(द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

☛ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।

☛ पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

समस्याओं को चुनौती समझिए!

आमतौर पर समस्याएँ दुःख का स्रोत समझी जाती हैं। कोई भी समस्यापूर्ण जीवन नहीं बिताना चाहता। सभी चाहते हैं कि जीवन समस्याओं से, चिन्ताओं से मुक्त हो। समस्याओं का अभाव उन्हें सुख प्रतीत होता है और समस्याओं का सामना दुःख। यह क्या सचमुच ऐसा है? समस्याहीन जीवन क्या एकरसता का पर्याय नहीं बन जाता। समस्याएँ ही हैं जो जीवन में रस घोलती हैं, उसे विविध और चुनौती भरा बनाती हैं। चुनौतीहीन, समस्याहीन जीवन निष्क्रिय हो जाता है।

समस्याएँ यदि चुनौती बना ली जाएँ, समझ ली जाएँ तो फिर उनसे जूझने में अपनी सुप्त शक्तियों का अहसास होने लगता है और अहसास के साथ आस्था का सम्मिश्रण हो जाए तो समस्या न केवल तिरोहित हो जाती है, वह एक नयी ऊर्जा, नये विश्वास से भर जाती है।

इस विषय में विशेष अध्ययन के लिए पाठकों को हमारी पुस्तक 'सफलता का पथ' पढ़नी चाहिए। फिलहाल आपके सुखी और प्रसन्न जीवन के लिए दस सूत्र लिखे जा रहे हैं-

प्रतिदिन की अच्छी बातें नोट करें

हर व्यक्ति के साथ अक्सर ऐसा वाक्या हो जाता है जिसे वह अपनी व्यक्तिगत डायरी में लिख सके। वक्त आने पर उन बातों को याद करके व्यक्ति अपने लबों को मुस्कराहट दे सकता है। कोई कठिनाइ होने पर उससे घबराएँ नहीं, बल्कि उसे हल करने की पहल करें। उदाहरण के रूप में जो लोग यह महसूस करते हैं कि उन्होंने खुद पर काबू पा लिया है वे ज्यादा खुश रहते हैं, वनिस्पत उनके जो यह समझते हैं कि खुद पर काबू पाना उनके बूते के बाहर की चीज है। अतः रोजाना की अच्छी बातों को नोट करें, खाली समय में इन्हीं बातों से दिल बहलाएँ।

हँसिए और हँसाइये

मनोवैज्ञानिकों की राय है कि जो लोग हताश व निराश रहते हैं वे अपनी जिम्मेदारियों को ठीक ढंग से नहीं निभा पाते हैं। वहीं हँसते रहने वाले लोगों में इम्यून सिस्टम (प्रतिरोधी क्षमता) की ताकत ज्यादा होती है, इसी कारण दर्द में राहत मिलती है। अतः हँसने वाले लोग प्रायः कम बीमार पड़ते हैं।

दोस्ती यारी बढ़ाएँ

एक अध्ययन के अनुसार जल्दी-जल्दी घुलने-मिलने वाले लोग खुशदिल व सुखी रहते हैं क्योंकि उनका परिचय का दायरा बहुत बड़ा होता है। जिसके कारण वे अपना दुःख दर्द दोस्तों में बांट लेते हैं। जबकि अपने दायरे में रहने वाले बहुत कुंठित व हीन भावना से ग्रस्त होते हैं। एक अध्ययन के अनुसार जिनके दोस्त ज्यादा होते हैं वे लम्बी आयु जीते हैं और घुट-घुट कर जीने वाले लोगों की उम्र १० वर्ष कम हो जाती है। दोस्ती यारी बढ़ाने का मकसद यह नहीं है कि फालतू व आलसी दोस्तों को भी अपने साथ शामिल करें।

खुद को भी महत्व दें

व्यक्ति को अगर उन्नति करनी है तो स्वयं को महत्व दें। स्वयं की शख्सियत को पहचानें, न कि दूसरों के जैसे बनने की कोशिश करें। इससे व्यक्ति निराशा के भंवर में फंस जाता है। यदि कल्पना छोड़ हकीकत में जीवन निर्वाह करेंगे तो जीने का मजा कुछ अलग ही आयेगा।

पैसे को अनावश्यक महत्व न दें

अगर आप यह सोचते हैं कि पैसे से हर खुशी खरीद सकते हैं तो आप गलत हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक १९६७ की तुलना में आज अमेरिकी नागरिकों की आय दस गुना हो गई है। फिर भी वे १९६७ की तुलना में न ज्यादा खुश हैं न सन्तुष्ट। कहने का तात्पर्य यही है कि रुपयों से खुशी नहीं खरीदी जा सकती। एक अध्ययन के अनुसार जो नौकरीपेशा लोग ओवरटाइम करते हैं वे उनसे ज्यादा खुश नहीं जो ओवरटाइम करते हैं।

हर काम मन लगाकर करें

कोई भी काम करने से पूर्व उस कार्य को करने हेतु पूरा मन बना लें। मन को प्रसन्न रखने के लिए सुबह-शाम घूमें व हरी घास पर चलें।

सन्तुष्ट तथा खुश रहें

यह एक आम धारणा है कि ज्यादा पैसा, रिश्ते, व्यवसाय, कैरियर आदि जीवन में खुशियाँ भर देंगे, लेकिन यह एक गलतफहमी से ज्यादा कुछ नहीं है। आपको चाहिए कि ऐसी बातों का संग्रह रखें जो आपको सचमुच संतोष दे। किसी भी बड़े फैसले या बड़ी समस्या के वक्त यही संग्रह आपकी बहुत मदद करेगा। थोड़े फायदे के लिए खुशियों का गला न घोटें। खुशी हर पल, खुशी हरदम यही आपका मकसद होना चाहिए।

टेलीविजन प्रोग्राम देखें, दूर दृष्टि से

केवल वक्त काटने के लिए टीवी देखने की आदत उचित नहीं? टीवी के ज्यादातर प्रोग्राम मारधाड़, सैक्स, अपराध, फूहड़ असत्य से भरे पड़े हैं। अतः टीवी पर चयन करके शिक्षाप्रद व ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम ही देखें, इससे आपके ज्ञान का विकास होगा। एक अध्ययन के दौरान एक सर्वे किया गया जो धार्मिक क्रियाकलापों, पूजा-पाठ, जप-तप आदि में रुचि लेते थे, वे लोग जीवन के प्रति आशान्वित और खुश नजर आएँ। आशावादी नजरिया रखने वाले ही कामयाबी की मंजिल तक पहुँचते हैं।

स्नेह व आत्मीयता अपनाएँ

प्यार व आत्मीयता खुशियों की जड़ है। भावनात्मक लगाव व स्नेह जितना आप लोगों में बांटेंगे उतना ही खुद को ज्यादा तनाव से मुक्त रखेंगे। अभी तक ऐसी दवा नहीं बनी जो प्यार से ज्यादा प्रभावशाली हो।

स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें

नींद पूरी न होने पर मन खिन्न हो जाता है, अतः नींद पूरी लें। साथ ही डायटिंग के चक्कर में खाली पेट न रहें। रोजाना आठ-दस गिलास पानी पीएँ। ऐसा भी न करें कि जरूरत से ज्यादा चीजों का सेवन करें।

आचार्य अशोक सहजानन्द,
सम्पादक सहज आनन्द (त्रैमासिक)
बी-५/२६३ यमुना विहार, दिल्ली-११००५३
चलभाष-८०१०३३९९१०

प्रसिद्ध योगगुरु बाबा रामदेव ने बयान दिया कि 'ज्योतिष विद्या ने क्यों नहीं कोरोना काल के बारे में पहले जानकारी दी। सारे मुहूर्त भगवान ने बना रखे हैं। ज्योतिषी काल, घड़ी, मुहूर्त के नाम पर बहकाते रहते हैं। बैठे-बैठे ही किस्मत बनाते हैं। किसी ज्योतिष ने यह नहीं बताया कि कोरोना आने वाला है।...'

बाबा रामदेव के इस बयान से पौराणिक मण्डल में खलबली मच गई। एक ओर वैदिक एजुकेशनल रिसर्च सोसायटी के संस्थापक पण्डित शिवपूजन शास्त्री ने बाबा रामदेव को शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी तो दूसरी ओर काशी विद्वत् परिषद् के महामन्त्री डॉ. रामनारायण द्विवेदी ने कहा कि बाबा रामदेव अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं।

दरअसल पौराणिक मण्डल ने कभी ज्योतिष के यथार्थस्वरूप को समझा ही नहीं। अनार्ष ग्रन्थों को पढ़कर उसने फलित ज्योतिष की भ्रामक अवधारणाओं को स्थापित किया और पूरे

ज्योतिष- फलित असत्य है

मनुष्य समाज को कर्महीन तथा फलमात्र का उपासक बना दिया। आधुनिक युग के सुविख्यात् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में फलित ज्योतिष पर कुछ ऐसे विचार प्रकट किए जिसके सामने फलित ज्योतिष की समस्त अवधारणाएँ धराशायी हो गईं।[१]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ज्योतिष का प्रतिपादन वेद से है। वेद के अनुसार ज्योतिष के अधिकार क्षेत्र में- बीजगणित, अंकगणित, खगोल विद्या (Astronomy), मौसम विज्ञान (Meteorology) और भूगर्भ विज्ञान (Geology) आते हैं। इस वैज्ञानिक ज्योतिष विद्या को यजुर्वेद २२/२८ में इस प्रकार स्थापित किया है-

नक्षत्र, उपग्रह, दिन, रात्रि, पक्ष, मास, ऋतुएँ, ऋतु-जन्य परिवर्तन, संवत्सर, द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी, चन्द्रमा, सूर्य, रश्मियाँ, ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, मरुत (१० प्राण, वायु, पवनादि) का उत्तम और यज्ञीय सुष्ठु क्रियाओं द्वारा सम्प्रयोग, जिससे विश्व के देव-देवियों (आप्त स्त्री-पुरुषों), मूल और शाखाओं, वनस्पतियों, फूलों, फलों और औषधियों के गुणों में वृद्धि हो तथा वे शुद्ध, पवित्र और यज्ञीय (श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी) सुहुत हों।[२]

यहाँ फलित ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, राशि, मुहूर्त, शकुन, अपशकुन जैसी अवैदिक क्रिया का कोई विधान नहीं है। जैसा कि पौराणिक मण्डल समझता रहा है। अब वेदों में खगोलीय, मौसमी और भूगर्भीय विद्या का वर्णन पढ़िए-

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते।

– ऋग्वेद १/९२/१

अर्थात् जब उषायें (या उषा रश्मियाँ) अरुण वर्ण (लाल रंग) के प्रकाश का क्षेपण करती हैं, तब ये पृथ्वी के पूर्वी आधे भाग और ग्रहों का निर्माण करती हैं। प्रकाश शब्द से यहाँ दिन के प्रकाश से अर्थ है। ऐसा तभी सम्भव होता है जब पृथ्वी गोल हो।[३]

वेद ने यहाँ स्पष्ट रूप से पृथ्वी की गोलाकार आकृति को प्रतिपादित किया है। प्रसिद्ध ज्योतिषी आर्यभट्ट ने भी वेद के उपर्युक्त कथन का समर्थन किया है-

भूग्रहमाना गोलार्धानि स्वछाययानि वर्णानि।
अर्धानि यथा सारं सूर्याभिमुखानि दीव्यते॥ – आर्यभट्ट ४/५

यह पृथ्वी गोल है अतः प्रत्येक मनुष्य स्वयं यह सोचता है कि वह स्वयं ऊपर की ओर है और पृथ्वी के दूसरी ओर का भाग मानो उसके अधीन है।

पृथिवी एक वर्ष (३६५-३६६ दिनों) में प्रत्येक राशि से सीधी गुजरती हुई अपने पूर्व स्थान पर आती है। इसी वर्ष को सूर्य

की गति के आधार पर यजुर्वेद ने १२ मास और ६ ऋतुओं में प्रतिपादित किया है-

१. बसन्त (ऋतु) - मधु , माधव (मास) - यजुर्वेद १३/२५
२. ग्रीष्म (ऋतु) - शुक्र, शुचि (मास) - यजुर्वेद १४/६
३. वर्षा (ऋतु) - नभ, नभस्य - यजुर्वेद १४/१५
४. शरद् (ऋतु) - इष, ऊर्ज - यजुर्वेद १४/१६
५. हेमन्त (ऋतु) - सह, सहस्य - यजुर्वेद १४/२७
६. शिशिर (ऋतु) - तप, तपस्य - यजुर्वेद १५/५७

अहोरात्रे पृथिवी नो दुहाताम्। - अथर्ववेद १२/१/३६

अर्थात् वायु की गैसों का प्रवाह पृथ्वी को भ्रमण कराता है। यहाँ स्पष्टतः वात सूत्र और सूर्य सिद्धान्त के परिधि मण्डल का वर्णन है।

तिस्रो भूमीरुपराः षड्विधानाः। - ऋग्वेद ७/८७/५

यहाँ पृथ्वी के छः महाद्वीपों की ओर संकेत किया गया है। ये ही छः महाद्वीप महाभाष्य व्याकरण १/११/११ में सात महाप्रदेश (द्वीप) हैं। १. जम्बू २. प्लक्ष ३. शाल्मल ४. कुश ५. क्रौंच ६. शोक और सातवाँ पुष्कर।

फलित ज्योतिष के पाखण्ड पर कट्टर पौराणिक विद्वानों की सम्मति-

१. सुप्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलविद जनार्दन जोशी ने अपनी पुस्तक 'ज्योतिष चमत्कार' (पृष्ठ १६१ लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद, प्रथम संस्करण) में फलित ज्योतिष पर बनारस के प्रसिद्ध ज्योतिषी पं. सुधाकर द्विवेदी का २२ मई, १९०६ को लिखा एक पत्र उद्धृत किया है, जो नीचे दिया जा रहा है-

"I don't have belief in astrology- I regard it as mere play as it has been written in the Vishva Gunadarsh that astrologers rob the people of their money by means of verbal jugglery-"

अर्थात्- मेरा विश्वास फलित ज्योतिष में नहीं है। मैं इसे एक प्रकार का खेल समझता हूँ। जैसे कि विश्वगुणादर्श में लिखा है कि ज्योतिषी लोग अपने वाग्जाल से लोगों का धन व्यर्थ लूटा करते हैं।

२. पौराणिक विद्वान् विद्यासागर ने आचार्य श्रीराम शर्मा के आश्रम में ज्योतिष पर गूढ़ अनुसन्धान के बाद यह निष्कर्ष निकाला-

'गणित और फलित ज्योतिष में बहुत दिनों से विवाद चल रहा है पर ग्रहगणित वस्तुतः विज्ञानसम्मत एक पूर्ण विद्या है। उसके साथ फलित ज्योतिष का जंजाल जुड़ जाने से यह असमंजस उठ खड़ा हुआ है।...

मुहूर्त जनमानस में गहराई से घुसे हैं। मुहूर्तवाद ने इतना अनर्थ किया है और कर रहा है कि उससे हुई हानियों को गिना नहीं जा सकता।' - ब्रह्मवर्चस् पंचांग की भूमिका

३. श्री सीताराम झा अपने गीतापंचांग में फलित ज्योतिष पर लिखते हैं-

'मैं पंचांग में राशिफल नहीं लिखता क्योंकि वह अनुचित है।... एक राशि में कई करोड़ लोग होते हैं, उनकी स्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं और जन्मपत्रियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं तो फिर राशिफल कैसे लिखा जा सकता है और वह सत्य क्यों हो सकता है?...'

४. बनारस के सुप्रसिद्ध पौराणिक और प्रकाण्ड ज्योतिष विद्वान् आचार्य हरिहर पाण्डेय की एक पुस्तक है- **'हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र'**[४] इस पुस्तक में आचार्य हरिहर ने फलित ज्योतिष की धज्जियाँ उड़ा कर रख दी हैं। आज तक कोई ज्योतिषाचार्य इस पुस्तक का खण्डन न कर सका। हम उस पुस्तक से एक स्थल का वाक्य उद्धृत करते हैं-

महर्षि दयानन्द ने बहुत सोच समझ कर और परमात्मा की कृपा प्राप्त कर पृथ्वी को 'चला' कहा, सूर्य और पूरे सौर परिवार को गतिमान कहा, गणित और वैज्ञानिक ज्योतिष को ग्राह्य कहा, फलित ज्योतिष के दोषों की व्याख्या की, पाश्चात्य ज्ञान का अन्धानुकरण नहीं किया, अंग्रेजों के दुःस्वार्थ और अनाचार को तथा पाश्चात्य संस्कृति के दोषों को पहचाना, उनसे घृणा की और उन्हें यहाँ से हटाने की प्रेरणा दी। श्रीमती ऐनी बेसेंट ने लिखा है कि स्वामी दयानन्द वह प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने कहा कि भारत भारतीयों का है।...'

- हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र पृष्ठ सं. २८० द्वितीय संस्करण- सन् २००६ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रकाशित।

५. F. W. Westaway ने फलित ज्योतिष की ठिठोली निम्न शब्दों में की है-

"The gods are always especially favourable to those who pay the astrologer a handsome fee"- Obsessions and Convictions of the Human Intellect; Pg. 4

अर्थात्- भगवान् विशेष रूप से उन लोगों के लिए हमेशा अनुकूल होते हैं जो ज्योतिषी को एक सुन्दर शुल्क का

भुगतान करता है।

फलित ज्योतिष पर पौराणिक मण्डली से ५ सामान्य प्रश्न-

प्रश्न १. पौराणिक पण्डित ग्रह आदि पूजा कराकर ग्रह-दोषों को शान्त कराते हैं। इसके बावजूद खगोलीय घटना सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण आदि से बहुत डरते हैं। क्या वो उन्हें

शान्त नहीं करा सकते? यदि राहु, केतु आदि को पोप-पण्डे नियन्त्रित कर सकते हैं तो उन्हें देशद्रोहियों पर क्यूँ नहीं बिठाते?

प्रश्न २. आगामी प्राकृतिक आपदा से होने वाली हानियों की सूची क्या विश्व का कोई ज्योतिषी दे सकता है?

प्रश्न ३. एक ही राशि लाखों व्यक्ति की होती है। क्या उस राशि का फल सभी व्यक्तियों पर घटित होता है? यदि नहीं तो राशिफल झूठा है।

प्रश्न ४. क्या विश्व का कोई भी ज्योतिषी हस्तरेखा, मस्तकरेखा, तालुरेखा आदि देखकर किसी जानवर का भविष्य बतला सकता है?

प्रश्न ५. रामायण के अनुसार श्रीराम को राजगद्दी पर बैठाने का मुहूर्त वशिष्ठ ऋषि ने निकाला था। यदि शुभाऽशुभ मुहूर्त सत्य होता तो श्रीराम को चौदह वर्ष के लिये वन में क्यों भटकना पड़ा? दशरथ की पुत्र वियोग में मृत्यु क्यों हो गई? तीनों रानियाँ विधवा हो गयीं। सीता का हरण हुआ। अतः वशिष्ठ का शुभ मुहूर्त शुभकार्य हेतु व्यर्थ गया।

ज्योतिषों का दावा है कि वह भविष्य देखते हैं, लेकिन वह खुद का भविष्य तक नहीं बता पाते। अतः सिद्ध है कि पौराणिक ज्योतिषी कर्महीनता और ठगी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। फलित ज्योतिष, मुहूर्त शास्त्र, ग्रह-नक्षत्र की पूजा, शकुन-अपशकुन, राशिफल, जन्मपत्री आदि जाली हैं।

सन्दर्भ-

१. सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास

२. ज्योतिष कितनी सच्ची? कितनी झूठी लेखक- महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती (वैदिक मिशनरी), मातुश्री धनदेवी, केशवराम धर्मार्थ वैदिक ट्रस्ट-धन कुटीर, बरेली से प्रकाशित- पृष्ठ ३

३. मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ के जून २०१६ का लेख 'वेद, वैदिक और भारतीय साहित्य में पृथ्वी'

४. इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् १९८६ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा दया प्रकाश सिन्हा के निर्देशन में छपा था।

-प्रियांशु सेठ (वाराणसी)

चलभाष- ०९८८९७८७५११

धर्मान्तरण का कुचक्र

(नियोगी समिति की रिपोर्ट)

गतांक से आगे .....

तब से आधी शती बीत गई, किन्तु नियोगी समिति का आँकलन और अनुशंसाएं आज भी सामयिक हैं। जो सामग्री नियोगी समिति ने इकट्ठा की उस से वह इस परिणाम पर पहुँची कि मिशनरी गतिविधियाँ किसी राज्य या देश की सीमाओं में स्वायत्त नहीं है। उनका चरित्र, संगठन और नियंत्रण अन्तर्राष्ट्रीय है। जब समिति ने कार्य आरम्भ किया तब पहले तो ईसाई मिशनों ने सहयोग की भंगिमा अपनाई। किन्तु जब उन्होंने देखा कि समिति अपने काम में गम्भीर है तब उन्होंने बहिष्कार किया। फिर नागपुर उच्च न्यायालय जाकर इस का कार्य बंद कराने का प्रयास किया। न्यायालय ने निर्णय दिया कि समिति का गठन और कार्य किसी नियम के विरुद्ध नहीं है।

अपनी जाँच-पड़ताल के सिलसिले में नियोगी समिति चौदह जिलों में, सतहत्तर स्थानों पर गई। वह ग्यारह हजार से अधिक लोगों से मिली, उसने लगभग चार सौ लिखित बयान एकत्र किए, इसकी तैयार प्रश्नावली पर तीन सौ पचासी उत्तर आए जिस में पचपन ईसाइयों के थे और शेष गैर-ईसाइयों के। समिति ने सात सौ गाँवों से भिन्न-भिन्न लोगों का साक्षात्कार लिया। समिति ने पाया कि कहीं किसी ने ईसा की निन्दा नहीं की, सभी जगह केवल अवैध तरीकों से धर्मांतरण कराने पर आपत्ति थी। यह आपत्तियाँ सुदूर क्षेत्रों में, जहाँ यातायात न होने के कारण शासन या प्रेस का ध्यान नहीं, वहाँ गरीब लोगों को नकद धन देने या स्कूल-अस्पताल की बेहतर सुविधाएँ देने के लोभ या नौकरी देने या पैसे उधार देकर दबाव डालने या नवजात शिशुओं को आशीर्वाद देने के बहाने जबरन बप्तिस्मा करने या आपसी झगड़ों में किसी को मदद कर के बाद में दबाव डालने या छोटे बच्चों और स्त्रियों का अपहरण करने तथा विदेशों से आने वाले धन के सहारे इन्हीं तरीकों से किसी क्षेत्र में पर्याप्त धर्मांतरण कराकर पाकिस्तान जैसा स्वतंत्र ईसाई राज्य बना लेने के प्रयासों, आदि सम्बन्धी थीं।

समिति ने पाया कि लूथरन और कैथोलिक मिशनों द्वारा नीतिगत रूप से धर्मांतरित ईसाइयों में अलगाववादी भाव भरे जाते हैं। उन्हें सिखाया जाता है कि धर्म बदल लेने के बाद उनकी राष्ट्रीयता भी वही नहीं रहती जो पहले थी। अतः अब उन्हें स्वतंत्र ईसाई राज्य का प्रयास करना चाहिए। मिशनरी दस्तावेजों, पुस्तकों, कार्यक्रमों आदि का अध्ययन कर समिति ने पाया कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत के प्रति मिशनरी नीतियाँ हैं- (१) राष्ट्रीय एकता का प्रतिरोध करना, (२) भारत और अमेरिका के बीच सहअस्तित्व के सिद्धान्त से मतभेद, (३) भारतीय संविधान द्वारा दी गई धार्मिक स्वतंत्रता का लाभ उठाते हुए मुस्लिम लीग जैसी ईसाई राजनीतिक पार्टी बनाकर अंततः एक स्वतंत्र राज्य बनाना अथवा कम से कम एक जुझारू अल्पसंख्यक समुदाय बनाना। भारतीय संविधान की उदारता देखकर यूरोप और अमेरिका में मिशनरी सूत्रधारों ने अपना ध्यान भारत पर केन्द्रित किया,

समिति ने इसके भी प्रमाण पाए।

किन्तु समिति की रिपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण अंश मध्य प्रदेश में मिशनरी गतिविधियों की स्थिति पर था। उसने पाया कि जिन क्षेत्रों में स्वतंत्रता से पहले स्वायत्त रजवाड़ों का शासन था और मिशनरियों पर अंकुश था, अब वहाँ उनकी गतिविधियाँ तीव्र हो गई हैं। इन नए खुले क्षेत्रों में पिछड़े आदिवासियों को धर्मांतरित कराने के लिए विदेशी धन उदारता से आ रहा है। 'आज्ञाकारिता में भागीदारी' नामक सिद्धान्त के अन्तर्गत चर्च को बताया जाता है कि वे जमीन से जुड़े रहें, किन्तु अपनी निष्ठा और आज्ञाकारिता को राष्ट्रीय पहचान से ऊपर रखें। समिति ने ईसाई स्रोतों से ही पाया कि वे मानते हैं कि उन के कार्य में सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति केवल धन है, हर जगह, हर समय, हर चीज धन पर ही निर्भर है। यहाँ तक कि जो भी व्यक्ति मिशनरियों से मिलने आता है केवल धन के लिए। भारतीय ईसाई विदेशी मिशनरियों का स्वागत भी केवल पैसे के लिए करते हैं। कहीं किसी आध्यात्मिक या दार्शनिक चर्चा या प्रेरणा का नामो-निशान नहीं था।

यह तथ्य एक लाक्षणिक उदाहरण भर था कि 'नेशनल क्रिश्चियन काऊंसिल आफ इण्डिया' के खर्च का मात्र बीसवाँ अंश ही भारतीय स्रोतों से आता है, शेष बाहर से। कमो-बेश आज भी स्थिति वही है। यह कितनी विचित्र बात है कि जब जोर-जबर्दस्ती, छल-प्रपंच आदि द्वारा ईसाइयत विस्तार कार्यक्रमों पर चिन्ता होती है, तो ईसाइयत को भारत में दो हजार वर्ष पुराना, इसलिए, 'भारतीय' धर्म बताया जाता है। किन्तु जब उसे राष्ट्रीय और आत्मनिर्भर होने के लिए कहा जाता है, तो उसे निर्बल होने के कारण विदेशी सहायता की आवश्यकता का तर्क दिया जाता है! जो भी हो, नियोगी समिति ने विदेशी स्रोतों से मिशनरी कार्यों के लिए आने वाले धन का भी हिसाब किया था और पाया कि 'शिक्षा और चिकित्सा' के लिए आए धन का बड़ा हिस्सा धर्मांतरण कराने पर खर्च किया जाता है।

जिन तरीकों से यह कार्य होता है वह आज भी तनिक भी नहीं बदले हैं। नियोगी समिति ने ठोस उदाहरण नोट किए थे। हरिजनों, आदिवासी छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उन्हें दी जानी वाली अतिरिक्त सुविधाओं को ईसाई प्रार्थनाओं में शामिल होने की शर्त से जोड़ा जाता है। बाईबिल कक्षा में शामिल न होने को पूरे दिन की अनुपस्थिति के रूप में दण्डित किया जाता है। स्कूल के उत्सवों का उपयोग ईसाई चिह्न की अन्य धर्मों के चिह्नों पर विजय दिखाने

के लिए किया जाता है। अस्पतालों में गरीब मरीजों को ईसाई बनने के लिए दबाव दिया जाता है। सबसे जोरदार फसल अनाथालयों में काटी जाती है। जहाँ बाढ़, भूकम्प जैसी प्राकृतिक विपदा में तबाह परिवारों के बच्चों को लाकर सबको ईसाई बना लिया जाता है। अधिकांश धर्मांतरण अनिच्छा से होते हैं, क्योंकि सबमें किसी न किसी लाभ-लोभ की प्रेरणा रहती है। समिति ने पाया कि किसी ने अपने नए धर्म का कोई अध्ययन या विचार जैसा कभी कुछ नहीं किया। धर्मांतरित लोग केवल साधारण आदिवासियों के झुण्ड थे जिनकी चुटिया कटवा कर बस उन्हें ईसाई के रूप में प्रस्तुत कर दिया जाता है।

रोमन कैथोलिक मिशनरी जरूरतमन्दों को उधार देकर बाद में उसे वापस न करने के बदले ईसाई बनाने की विधि में सिद्धहस्त हैं। अन्य ईसाई मिशनरियों ने ही नियोगी समिति को यह बात बतायी। यदि कोई वापस करना चाहे तो उसे कड़ा ब्याज देना पड़ता है। कर्ज पाने की शर्त में भी कर्ज माँगने वाले को अपने हिन्दू चिह्न छोड़ने, जैसे सिर की चोटी कटाने को कहा जाता है। कई लेनदार किशोर उम्र के और मजदूर होते हैं। यदि कोई व्यक्ति कर्ज लेता है, तो मिशनरी रजिस्टर में उस के पूरे परिवार को संभावित धर्मांतरितों में नोट कर लिया जाता है। कर्ज लेते समय ही एक वर्ष का ब्याज उस में से काट लिया जाता है। समिति को अपने सम्पूर्ण आकलन, अन्वेषण के दौरान एक भी ऐसा धर्मांतरित ईसाई न मिला जिसने धन के लोभ या दबाव के बिना ईसाई बनना स्वीकार किया हो!

कितना आश्चर्य है कि जो प्रगतिवादी लेखक संगठन और वामपंथी नाट्यकर्मी प्रेमचन्द की कहानी 'सवा सेर गेहूँ' पर हजारों नाटक मंचित कर चुके हैं, वे मिशनरियों की इस स्थायी, अवैध और घृणित महाजनी पर कभी कोई नाटक क्यों नहीं करते! मगर इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि

भारतीय वामपंथियों को वैसा हर साम्राज्यवाद प्रिय है जिसका निशाना हिन्दू समाज हो।

मिशनरी साहित्य में हिन्दू देवी-देवताओं की छवियों और उन

की पूजा पर अत्यन्त भद्दे आक्षेप रहते हैं। स्कूलों में मंचित नाटकों में उनकी हँसी उड़ाई जाती है। उनका मखौल बनाने वाले गाने लिखे, गाए जाते हैं। हिन्दू ग्रन्थों को विकृत करके प्रस्तुत किया जाता है। संविधान बनने के बाद से सरगुजा जिले में बने ईसाइयों की एक सूची सरकार ने समिति को दी थी। नियोगी समिति ने पाया कि वहाँ दो वर्ष में चार हजार उराँव ईसाई बने। उन में एक वर्ष से साठ वर्ष के पुरुष, स्त्री शामिल थे। समिति ने पाया कि उनमें अपने नए धर्म का कहीं, कोई भाव लेश मात्र न था। प्रायः लोगों को झुण्ड में थोक भाव में धर्मांतरित करा लिया जाता है। किन्तु रोमन कैथोलिक मिशनों ने समिति को अपने द्वारा धर्मांतरित कराए लोगों का विवरण नहीं दिया। क्योंकि उससे यह सच्चाई सामने आ जाती कि वह स्वेच्छा से नहीं, बल्कि संगठित, प्रायोजित हुआ था।

नियोगी समिति का प्रमाणिक निष्कर्ष था कि धर्मांतरण लोगों को राष्ट्रीय भावनाओं से विलग करता है (यही अपने समय में गाँधीजी ने भी कहा था)। धर्मांतरित ईसाइयों को सचेत रूप से इस दिशा में धकेला जाता है। उन से 'राम-राम' या 'जय हिन्द' जैसे अभिवादन छुड़वा कर 'जय यीशू' कहना सिखाया जाता है। मिशनरी स्कूलों के कार्यक्रमों में राष्ट्रीय ध्वज से ऊपर ईसाई झण्डा लगाया जाता है। ईसाई अखबारों में गोवा पर पुर्तगाल की औपनिवेशिक सत्ता बने रहने के पक्ष में लेख रहते थे, और इस बात की आलोचना की जाती थी कि भारत उसे अपना अंग बनाना चाहता है (तब गोवा पुर्तगाल के अधिकार में था)।

मिशनरी गतिविधियों की एक तकनीक समिति ने नोट की कि वह स्थानीय शासन और सरकार पर नियमित आरोप और शिकायतें करके एक दबाव बनाए रखते हैं, ताकि कोई उन की अवैध कारगुजारियों पर ध्यान देने का विचार ही न करे। यह एक जबरदस्त तकनीक है जो आज भी बेहतरीन रूप से कारगर है। समिति ने पाया कि मध्य प्रदेश शासन मिशनरी सक्रियता के क्षेत्रों में पूरी तरह तटस्थ रहा है, उसने कभी कोई हस्तक्षेप किया हो ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिला। किन्तु मिशनरी संगठन सरकार पर प्रायः कोई न कोई भेद-भाव जैसी शिकायत करते रहने की आदत रखते हैं। समिति ने पाया था कि यह प्रशासनिक अधिकारियों को रक्षात्मक बनाए रखने की पुरानी मिशनरी तकनीक रही है। यही आज भी देखा जाता है, जब दिल्ली, गुजरात, झारखंड, उड़ीसा या मध्य-प्रदेश में मिशनरी संगठन अकारण या उलटी बयानबाजी करके सरकार को रक्षात्मक बने रहने के लिए विवश करते हैं। उलटा चोर कोतवाल को डाँटे जैसी सफल तकनीक।

नियोगी समिति ने अनेकानेक मिशनरी दस्तावेजों का अध्ययन करके पाया था कि भारत में मिशनरी धर्मांतरण गतिविधियाँ एक वैश्विक कार्यक्रम के अंग हैं जो पूरे विश्व पर पश्चिमी दबदबा पुनर्स्थापित करने की नीति से जुड़ी हुई हैं। उसमें कोई आध्यात्मिकता का भाव नहीं, बल्कि गैर-ईसाई समाजों की एकता छिन्न-भिन्न करने की चाह है। जो भारत की सुरक्षा के लिए खतरनाक है। समिति की राय में ईसाई मिशन भारत के ईसाई समुदाय को अपने देश से विमुख करने का प्रयास कर रहे हैं। यानी, धर्मांतरण कार्यक्रम कोई धार्मिक दर्शन नहीं, बल्कि राजनीतिक उद्देश्य के अंग हैं। भारत के चर्च स्वतंत्र नहीं, बल्कि उनके प्रति उत्तरदायी हैं जो उनके रख-रखाव का खर्च वहन करते हैं। समिति के अनुसार धर्मांतरण दूसरे तरीके से राजनीति के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

यह संयोग नहीं है कि नियोगी समिति ने अवैध, राष्ट्र-विरोधी, समाज-विरोधी मिशनरी गतिविधियों को रोकने के लिए जो अनुशंसाएं दी थीं, उनका आज भी उतना ही मूल्य है। वे अनुशंसाएं यह थीं- (१) जिन विदेशी मिशनों का प्राथमिक कार्य मात्र धर्मांतरण कराना है, उन्हें देश से चले जाने के लिए कह देना चाहिए, (२) चिकित्सा और अन्य सेवाओं के माध्यम से धर्मांतरण बंद करने के लिए कानून बनाए जाने चाहिए, (३) किसी की विवशता, बुद्धिहीनता, अक्षमता, असहायता आदि का लाभ उठाते हुए धोखे या दबाव से धर्मांतरण को पूर्णतः प्रतिबन्धित करना चाहिए, (४) विदेशियों द्वारा तथा छल-प्रपंच से धर्मांतरण रोकने के लिए संविधान में उपयुक्त संशोधन होना चाहिए, (५) अवैध तरीकों से धर्मांतरण बंद करने के लिए नए कानून बनने

चाहिए, (६) अस्पतालों में नियुक्त डॉक्टरों, नर्सों और अन्य अधिकारियों के रजिस्ट्रेशन में ऐसे संशोधन करने चाहिए जिससे उनके द्वारा किसी मरीज के ईलाज और सेवा के कार्यों के दौरान उसका धर्मांतरण न होने की शर्त हो, (७) बिना राज्य सरकार की अनुमति के धार्मिक प्रचार वाले साहित्य के वितरण पर प्रतिबन्ध हो।

जब नियोगी समिति की यह रिपोर्ट सार्वजनिक हुई तो मिशनरी संगठनों ने इसे तानाशाही की ओर बढ़ने का उपाय बताकर निन्दा की। किन्तु किसी ने इस रिपोर्ट के तथ्यों, आकलनों को मिथ्या कहने का साहस नहीं किया। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे नेताओं, प्रशासकों, बुद्धिजीवियों ने समिति की किसी अनुशंसा को लागू करने का प्रयास नहीं किया। यही कारण है कि रोग, उस के फैलने के तरीके, उस से होने वाली हानि और देश की सुरक्षा और अखण्डता को खतरा भी यथावत् है। इस अर्थ में नियोगी समिति की ऐतिहासिक रिपोर्ट आज पचपन वर्ष बाद भी सामयिक और पठनीय है।

बाबा माधवदास संभवतः अब नहीं हैं, किन्तु उनकी वेदना का कारण यथावत् है। न रोग दूर हुआ, न उस के निदान की कोई चिन्ता है। कंधमाल (उड़ीसा) की घटनाएँ इसका नवीनतम प्रमाण हैं। नियोगी समिति ने उस के सटीक उपचार के लिए जो सुचिन्तित, विवेकपूर्ण अनुशंसाएं दी थीं, वह आज भी उतनी ही आवश्यक हैं जितनी तब थीं। परन्तु उसके प्रति हिन्दू उच्च वर्ग की उदासीनता भी लगभग वैसी ही है। इनमें वैसे हिन्दू भी हैं जो सभी बातें जानते हैं, किन्तु अपने सुख-चैन में खलल डाल कोई कार्य नहीं करना चाहते। कोई दूसरा कर दे तो उन्हें अच्छा ही लगता है। पर उसके लिए एक शब्द कहने तक का कष्ट वह उठाना नहीं चाहते।

इस भीरु प्रवृत्ति को महान् रूसी लेखक सोल्झेनित्सिन ने 'म्यूनिख भावना' की संज्ञा दी थी। इस मुहावरे की उत्पत्ति १९३८ में जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस और इटली के बीच हुए म्यूनिख समझौते के बाद हुई। उस समझौते में महत्वपूर्ण यूरोपीय देशों ने चेकोस्वोवाकिया को हिटलरी जर्मनी की दया पर छोड़ कर स्वयं को सुरक्षित समझ लिया था। अपने नोबेल पुरस्कार भाषण (१९७०) में सोल्झेनित्सिन ने कहा थाए "The spirit of Munich is a sickness of the will of successful people, it is the daily condition of those who have given themselves up to the thirst after prosperity at any price, to material well-being as the chief goal of earthly existence. Such people – and there are many in today's world – elect passivity and retreat, just so that their accustomed life might drag on a bit longer, just so as not to step over the threshold of hardship today – tomorrow, you'll see, it will all be all right. (But it will never be alright! The price of cowardice will only be evil; we shall reap courage and victory only when we dare to make sacrifices.)" भारत के उच्च वर्गीय हिन्दुओं में यह भावना केवल ईसाई मिशनरियों के आध्यात्मिक आक्रमण के प्रति ही नहीं, बल्कि इस्लामी आतंकवाद, कश्मीरी मुस्लिम अलगाववाद और नक्सली विखण्डनवाद जैसे उन सभी घातक परिघटनाओं के प्रति है जिनका निहितार्थ उन्हें मालूम है। किन्तु इनसे लड़ने के लिए वे कोई असुविधाजनक कदम उठाना तो दूर, दो सच्चे शब्द कहने से भी वे कतराते हैं।

साभार- डॉ. शंकर शरण

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडौदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला

इंसानियत का गहना.... विनम्रता

जिस तरह समुद्र मंथन के समय बहुत सारी चीजें मिली थी (किंवदती) ठीक उसी तरह इंसान का दिमाग अपने आप में एक छोटा समुद्र है। जिसमें कई प्रकार के विचार पैदा होते रहते हैं। आदमी के मन में जिस प्रकार के विचार पैदा होते हैं मौका मिलने पर वह उन पर अमल भी करता है। विचारों को अमल में लाने के साथ साथ उनकी अभिव्यक्ति भी होती रहती है। जिस तरह एक समझदार दुकानदार अपनी चीजों को अपने ग्राहकों को सुन्दर तरीके से पैक करके मीठी और मोह लेने वाली वाणी से सौंपता है जिससे प्रभावित होकर वह ग्राहक बार-बार उसी दुकानदार के पास आना चाहता है, बशर्ते बेचे हुए माल की कीमत तथा गुणवत्ता उचित हो। दुकानदार का ईमानदार, मीठा बोलने वाला, सम्मानजनक व्यवहार करने वाला तथा विनम्र होना बहुत जरूरी है। ठीक इसी प्रकार हमारे जीवन में विनम्रता का विशेष महत्व है। विनम्रता एक ऐसा चुम्बक है जो कि विभिन्न लोगों को आपकी तरफ आकर्षित कर लेता है, आपके साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उन्हें लालायित करता है। विनम्र, सभ्य, ईमानदार, मीठा बोलने वाला, ज्ञानी, दूरदर्शी, निष्पक्ष, समर्पित भावना वाला, दूसरों को सम्मान देने वाला, उचित निर्णय लेने वाला आदमी दूसरों का मन मोहकर सभी का चहेता बन जाता है। घर आए मेहमान के साथ अगर विनम्रता तथा सम्मानजनक तरीके से स्वागत किया जाएगा तो आप उसके दिल में समा जाएँगे। विनम्र व्यक्ति किसी के प्रति ईर्ष्या या द्वेष भावना नहीं रखता उसके मन में अहंकार तो लेशमात्र भी नहीं होता। यही विनम्रता ही थी जिसके कारण भगवान कृष्ण दुर्योधन के शाही भोज को ठुकरा कर महात्मा विदुर के घर साग रोटी खाकर आनन्दित हुए। इसी

विनम्रता के कारण भगवान श्रीराम भीलनी के बेर मगन होकर खा रहे थे। विनम्रता का पाठ घरों में हमारे माता-पिता, हमारे शिक्षक, धार्मिक गुरु तथा समाज सुधारक लोग हमें पढ़ा सकते हैं। कुछ लोगों को जन्म से ही विनम्रता परमात्मा की तरफ से सौगात के तौर पर उनकी आदत के तौर पर मिली हुई होती है। विनम्रता हमें सहनशीलता, संयम, परहित, देश भक्ति, संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, बड़े बुजुर्गों के प्रति आदर, सम्मान तथा श्रद्धा का पाठ पढ़ा सकती है। सभी लोग विनम्र व्यक्ति को ही पसन्द करते हैं। धार्मिक गुरुओं में अगर विनम्रता नहीं होगी तो उनके शिक्षाप्रद प्रवचन कौन सुनने जाएगा? इसके विपरीत अहंकारी आदमी को कोई पसन्द नहीं करता। उसकी ताकत, जवानी, पद, धन तथा ऊँचे परिवार के कारण डर, शर्म या लिहाज करके लोग बेशक दिखावे के तौर पर इज्जत करें परन्तु दिल से ऐसे आदमी को कोई नहीं चाहता। जिन्दगी में दुःख-सुख का आना स्वभाविक है। विनम्र आदमी सहनशील होने के कारण दुःख को हँसते-खेलते सहन कर लेता है

परन्तु अहंकारी आदमी में यह गुण कहाँ? कबीर जी ने अहंकारी आदमी की तुलना बांस से की है जिसमें ५ अवगुण होते हैं। एक तो वह ऊँचा होने के कारण अपने आप को सबसे बड़ा समझता है, दूसरे, चन्दन के साथ पैदा होने वाली और वनस्पति तो चन्दन हो जाती है परन्तु बांस चन्दन नहीं

बन पाता। बांस गाँठ वाला होता है अर्थात् अहंकारी आदमी के मन में कुछ और होता है और मुँह में कुछ और होता है। बांस देखने में तो मजबूत होता है परन्तु बीच में से खोखला होता है, यही बात अहंकारी आदमी में होती है, और पाँचवा दोष बांस में यह होता है जिसको कुल घातक भी कहते हैं क्योंकि बांस आपस में रगड़-रगड़ कर आग लगा देते हैं ठीक इसी तरह अहंकारी आदमी भी दूसरों के साथ झगड़ा तथा कलह, क्लेश करता रहता है जबकि विनम्र व्यक्ति में इस प्रकार का कोई दोष नहीं होता। विनम्र व्यक्ति समभाव प्रवृत्ति तथा प्रकृति वाला होता है। एक बार सुकरात के पास उसके पुराने सहपाठी तथा सहयोगी गए और पूछने लगे.... हम सब एक ही गुरु के शिष्य हैं और हमारी सबकी एक जैसी ही पढ़ाई है परन्तु लोग तुम्हारी ज्यादा इज्जत करते हैं पर हमें कोई पूछता नहीं। सुकरात ने विनम्रता से कहा..... आप मेरे प्रिय मित्र और सहयोगी हैं पहले आप बैठिए, जलपान कीजिए उसके बाद मैं बात करूँगा। लेकिन क्रोधी मित्र कहने लगे.... नहीं-नहीं, पहले हमें वो बताओ जो हम पूछ रहे हैं। तुम्हें हमारे से ज्यादा क्या आता है जिसकी वजह से लोग तुम्हारी इज्जत करते हैं? सुकरात ने बहुत ही विनम्रता से कहा..... लोग मेरी इसलिए इज्जत करते हैं क्योंकि मुझे कुछ भी नहीं आता.... विनम्रता से परिपूर्ण इस उत्तर को सुनकर उसके सहयोगी शर्मिंदा हुए और वहाँ से चले गए। हमारे पुराने ग्रन्थ ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं जहाँ विनम्र व्यक्ति को मान-सम्मान तथा मोक्ष प्राप्त हुआ। जबकि अभिमानी और अहंकारी व्यक्ति की निन्दा तथा बुराई हुई। रावण के एक लाख पूत तथा सवा लाख नाती थे, वह चारों वेदों और आठों पुराणों को जानने वाला, शिव भक्त, मौत को जीतने वाला और सोने की लंका में रहने वाला राजा था परन्तु अपनी ताकत के अहंकार पर उसने श्री रामचन्द्र जी की पत्नी सीता को चुराने का हीन काम किया जिसकी वजह से वह श्री रामचन्द्र जी के हाथों मारा गया। और महाभारत में दुर्योधन बहुत ताकतवर राजा धृतराष्ट्र का पुत्र था। दूर-दूर तक बड़े-बड़े शूरवीर राजा महाराजा उससे डरते थे परन्तु अहंकार के कारण उसने भी कौरव वंश का महाभारत के युद्ध में विनाश करवा दिया। परन्तु इतिहास में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जिन्होंने अपनी विनम्रता के कारण मानवता का कल्याण किया और यश प्राप्त किया। बल्कि अमर हो गए जिनमें महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, गुरु नानक देव, भगत कबीर आदि का नाम स्मरणीय है। हजारों साल बीत जाने के बाद भी इनकी आज भी पूजा की जाती है। दुनिया में रौब, धौंस, ताकत, गुण्डागर्दी, हेरा-फेरी, ऊँचा बोलकर दूसरों को डराना, अपना उल्लू सीधा करने के लिए अपने पद या अमीरी का दुरुपयोग करना तथा घमंड करना मनुष्य के लिए नरक के द्वार खोल देता है। विनम्रता तथा त्याग की मूर्ति साधु, सन्तों, तपस्वियों, मुनियों के लिए राजा-महाराजा लोग अपना सिंहासन तक उनको सौंप देते थे। लेकिन किसी को विनम्रता का गलत मतलब भी नहीं निकालना चाहिए। आजकल हमारे घरों में विनम्रता के अभाव के कारण कलह, क्लेश, गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़े, आपसी ईर्ष्या,

अविश्वास, मारपीट, ऊँची आवाज में बात करना, बड़े बुजुर्गों की इज्जत ना करना तथा उन्हें उनकी प्रॉपर्टी पर जबरदस्ती कब्जा करके वृद्ध आश्रम धकेल देना आदि बातें देखने को मिलती हैं। विनम्रता के अभाव के कारण ही परिवार जनों को अपनी-अपनी पड़ी रहती है, दूसरों के बारे में कभी सोचने की फुर्सत नहीं मिलती, इसलिए अधिकांश परिवार नर्क बने हुए हैं, कोई किसी से ठीक से बात भी नहीं करता, चाहे पति-पत्नी, पिता-पुत्र, सास-बहू अथवा भाभी ननद की बात भी क्यों ना की जाए। यह सब अच्छे संस्कारों

के अभाव के कारण ही होता है। कहा जाता है कि ...... **'फलवन्ता वृक्षा सदा नमन्ति'** गुणी व्यक्ति हमेशा विनम्र होता है। कोयल भी काली होती है और कौवा भी काला होता है लेकिन कोयल की मीठी वाणी सुनकर कानों को आनन्द मिलता है जबकि कौवे की कर्कश आवाज सुनकर लोग उसको पत्थर मारकर भगा देते हैं। इसी तरह मीठा बोलने वाले विनम्र व्यक्ति की हमेशा इज्ज्त होती है। हमारी राजनीति में तो विनम्रता नाम की चीज का मानो अकाल ही पड़ा हुआ है। तभी तो राजनीति को एक गन्दा और नफरत के योग्य खेल कहा जाता है। कोई भी शरीफ तथा सभ्य आदमी आज राजनीति में प्रवेश नहीं करना चाहता। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि विनम्र, गरिमामय, ज्ञानी, परहितकारी, सच्चे और ईमानदार तथा परिश्रमी लोग अगर देश पर शासन करें तो देश की काया पलट कर सकते हैं। लेकिन विडम्बना यह है कि जो लोग आज देश के शासन की बागडोर सम्भाल रहे हैं जिनमें विनम्रता तथा गरिमा का अभाव है वह उपर्युक्त अच्छे लोगों को राजनीति में प्रवेश नहीं करने देना चाहते। राजनीति में माफिया राज है। सत्तासीन होने के बाद राजनेता भ्रष्टाचार में लिप्त होते हैं, पद का दुरुपयोग करते हैं, अपने परिवार जनों, रिश्तेदारों या चमचों को ऊँचे पदों पर नियुक्त करते हैं, अपने प्रतिद्विन्दिओं को झूठे मुकदमों में फंसाते हैं तथा उनके खिलाफ सत्ता का दुरुपयोग करने की व्यवस्था करते हैं। अगर देखा जाए तो आज के जमाने में सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम, परहित, संवेदनशील होना, मीठा बोलना पुराने जमाने की बातें हो गई हैं। इन पर अमल करने वाले आदमी को पागल कहा जाता है। अगर घर में पति-पत्नी, पिता-पुत्र, सास-बहू, भाभी ननद, गुरु-शिष्य, मित्र और मित्र के बीच विनम्रता का वातावरण बन जाए तो समाज में सौहार्द, परस्पर सम्मान की भावना प्रचलित हो जाए तथा क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, बदला लेना, ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक, तथा आपसी वैमनस्य समाप्त हो जाए। आप किसी के साथ विनम्रता का व्यवहार करते हो तो ना सिर्फ उसका दिल जीत सकते हो बल्कि एक दूसरे के लिए कई प्रकार से उपयोगी भी हो सकते हो। अब यह आप पर निर्भर करता है आप विनम्रता का अनुसरण करते हुए खुद सुखी रहकर दूसरों को सुख देना चाहते हो या नहीं।

- प्रो. श्याम लाल कौशल
मकान नं. ९७५-बी/२०
ग्रीन रोड़, रोहतक- १२४००१ (हरियाणा)

■■■

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (दशम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१	१ र	■	२	२	२ न	■	३	■
४	४	४ धा	४	■	५	५ द्र	■	६ भ	६
७	७	७ क	■	८	८ लो	८	■	९	९ स

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. धृतराष्ट्र का विवाह कहाँ की राजपुत्री से हुआ?
२. पाण्डु की स्त्री माद्री कहाँ के राजा की पुत्री थी?
३. भक्ष्याभक्ष्य कितने प्रकार का होता है?
४. जो मांसभक्षण और मद्यपानादि करते हैं, उनका शरीर किससे दूषित हो जाता है?
५. आर्यों के घर में पाकादि सेवा का कार्य कौन करे?
६. धर्मादि कर्मों से प्राप्त भोजन को क्या कहते हैं?
७. भक्ष्याभक्ष्य का दूसरा प्रकार कौन सा है?
८. अर्जुन का विवाह पाताल के राजा की कन्या के साथ हुआ, उस कन्या का क्या नाम था?
९. प्राचीन काल में दूध, घी, बैल आदि की बहुताई होने से अन्न और .... पुष्कल प्राप्त होते थे।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/२१ का सही उत्तर

१. समाधान २. मुमुक्षुत्व ३. दो घण्टा
४. अभिनिवेश ५. पाँच ६. राग ७. सालोक्य

"विस्तृत नियम पृष्ठ १३ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०२१

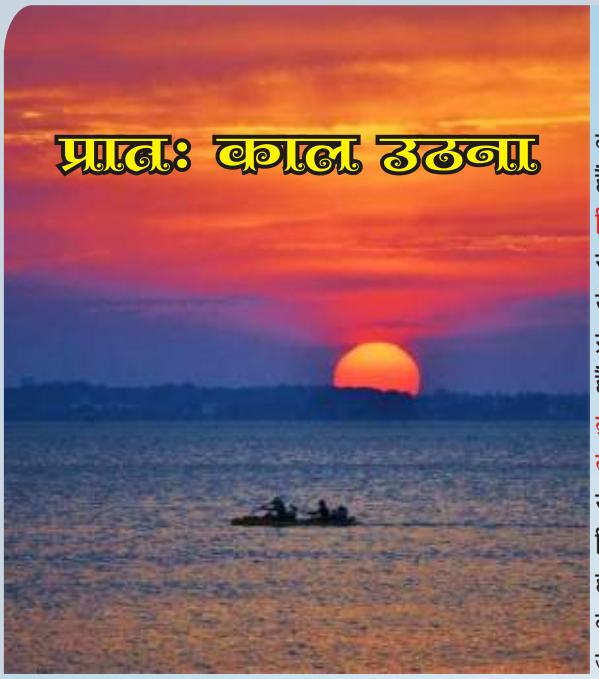

सुश्रुत आचार्य लिखते हैं जिस मनुष्य के वात आदि दोष, अग्नि धातु और मल समान हों, जो मनुष्य अपने शरीर के अनुसार क्रिया करता हो, जिसका शरीर, जिसकी इन्द्रियाँ और जिसका मन प्रसन्न हो वही मनुष्य स्वस्थ अथवा आरोग्य कहा जाता है।

संसार में निरोग रहने के बराबर कोई सुख नहीं है। किसी अच्छे विद्वान् ने कहा है- 'धर्मार्थ काम मोक्षाणां आरोग्यं मूल कारणं' अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थों की जड़ आरोग्यता है। जो लोग धर्म परायण हैं, वे भी शरीर ही को धर्म आदि का मुख्य साधन समझते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि बिना आरोग्यता के इस लोक और परलोक का कोई काम नहीं हो सकता। शरीर अस्वस्थ रहने से किसी काम में दिल नहीं लगता। विषय वासना व्यर्थ हो जाती है, रोगी को कुछ अच्छा नहीं लगता। धन, पुत्र, स्त्री आदि जितने सुख हैं उनमें आरोग्यता ही प्रधान सुख है क्योंकि उस एक के बिना सब सुख फीके और निकम्मे जान पड़ते हैं। इसी विचार से मुसलमान हकीम भी कह गए हैं कि 'एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत है' कौन ऐसा मूर्ख होगा जो सब सुखों की मूल आरोग्यता की रक्षा करना न चाहेगा?

पाठक यदि आप आरोग्यता चाहते हैं, यदि आप सदा सर्वदा स्वस्थ रहकर सुख से जीवन काटना चाहते हैं, यदि आप संसार में दीर्घजीवी होकर स्वार्थ परमार्थ साधन करना चाहते हैं, यदि आप अकाल मृत्यु से बचना चाहते हैं तो आप हमेशा सूर्योदय से चार घड़ी पहले ही अपने बिस्तरों को छोड़ देने की आदत डालिए। श्रुति, स्मृति, नीति और पुराण जहाँ देखते हैं वहाँ पर ही सूरज निकलने से पहले सोकर उठना लाभदायक लिखा पाते हैं। वैद्यक ग्रन्थों में भी बड़े सवेरे उठना ही परम लाभदायक लिखा है। भावप्रकाश पूर्व खण्ड के चौथे प्रकरण में लिखा है-

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत स्वस्थो रक्षार्थ मायुषः।
तत्र दुखःस्य शान्त्यर्थं स्मरेश्मधुसूदनम।।

स्वस्थ अर्थात् निरोगी मनुष्य अपनी जिन्दगी की रक्षा के लिए चार घड़ी के तड़के उठे और उस समय दुख नाश होने के लिए भगवान का भजन करे। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी की अनेक पुस्तकों में अच्छे-अच्छे विद्वानों ने लिखा है कि जो लोग रात को ९-१० बजे उचित समय पर सो कर सवेरे सूरज उदय होने से पहले ही अपने बिछौने का मोह छोड़ देते हैं उनका शरीर सदा आरोग्य रहता है और उनकी विद्या, बुद्धि भी बढ़ती है। सूर्योदय से कुछ पहले के समय को अमृतवेला कहते हैं। उस समय की हवा बहुत ही सुहावनी और तन्दुरुस्ती के हक में अमृत के समान होती है। उस हवा से लाल खून की तेजी बढ़ती है, शरीर में तेज और बल का संचार होता है, काम करने में उत्साह होता है। बदन में एक प्रकार की स्फूर्ति आ जाती है। सवेरे ही जो काम उठाया जाता है वह बहुत ही अच्छी तरह पूरा होता है। कठिन से कठिन विषय उस समय सरलता से समझ में आ जाते हैं। विद्यार्थियों को सवेरे सबक बहुत जल्दी याद होता है और लम्बे समय तक याद रहता है। अंग्रेजी में भी एक कहावत प्रसिद्ध है-

Early to bed and early to rise,
makes a man healthy, wealthy and wise.

इसका भावार्थ यह है कि थोड़ी रात गए सोने और थोड़ी रात रहे जागने से आदमी तन्दुरुस्त, दौलतमन्द और अकलमन्द हो जाता है। रामचरित मानस के बालकाण्ड में लिखा है-

उठे लखन निसि बिगत सुनि, अरुनसिखा धुनि कान।
गुरु तें पहिले जगतपति, जागे राम सुजान।।

इस दोहे से साफ मालूम होता है की श्री राम लक्ष्मण भी चार घड़ी रात रहे ही उठ बैठते थे। क्योंकि मुर्गा प्रायः

चार घड़ी या कुछ रात रहते हुए ही बोलता है। हमें कुछ दिन सरकारी फौज में रहने का काम पड़ा। वहाँ हम कितनी ही बार कई आला दर्जे के फौजी अफसरों को बहुत सवेरे उठते और शौच आदि से निपट कर घोड़ों पर सवार होकर या पैदल ही हाथ में छड़ी लेकर खुले मैदान में हवा खाने को जाते देखा करते थे इसी से वह लोग सदा हृष्टपुष्ट बलिष्ठ और तन्दुरुस्त रहते थे।

जितने बुद्धिमान लोग पहले हो गए हैं वे सब सवेरे जल्दी उठा करते थे, उन सबका उल्लेख करने से विषय के बढ़ जाने का भय है। आरोग्यता और सुख चाहने वाले मनुष्य को सवेरे जल्दी उठना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि दिन चढ़े उठने से आरोग्यता नष्ट हो जाती है, मन मलीन रहता है, सुस्ती और आलस्य घेरे रहते हैं, कामकाज में दिल नहीं लगता। सूरज निकलने तक सोते रहने को प्रसिद्ध नीतिकार चाणक्य ने भी बुरा कहा है वह कहते हैं-

कुचैलिनं दन्तमलोपसृष्टं,
बह्वाशिनं निष्ठुरभाषिणं च।
सूर्योदये चास्तमिते शयानं,
विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः।।

अर्थात् जो मेले कपड़े पहनता है, जो दांतो को साफ नहीं रखता, जो बहुत खाता है, जो कड़वी वाणी बोलता है और जो सूरज उदय होने और अस्त होने के समय सोता रहता है वह चाहे चक्रधारी विष्णु ही क्यों न हो तो भी लक्ष्मी उसको छोड़ देती है। पाठक यदि आप अपना भला चाहते हैं और संसार में सुख से आयु व्यतीत करना चाहते हैं तो ऊपर के लेख पर खूब ध्यान दीजिए और चार घड़ी के सवेरे उठने की आदत डालिए। देखिए फिर आप के रोग, शोक, दुःख, क्लेश आदि कहाँ भाग जाते हैं।

– पंडित हरिदास वैद्य, कोलकाता
साभार- स्वास्थ्य रक्षा (१९११ में प्रकाशित)

ईश्वर–जीव–प्रकृति

जड़ तत्व कि आपस में मिल जाने पर,
उत्पन्न जीव हो जाते हैं यूँ कह कर।
संतोष कर लिया करते हैं कुछ सज्जन,
इनका विज्ञान न करता कभी समर्थन।
जड़ से जड़ मिलकर जड़ ही रह पाएगा,
कैसे अभाव में भाव भला आएगा।
चेतनता जड़ता गुण है विरोधी रखते,
एक ही द्रव्य में दो न कभी हो सकते।
अवश्य गुणी का गुण आधार रहा है,
गुण से उसका हो साक्षात्कार रहा है।
गुण भिन्न–भिन्न इन भिन्न–भिन्न गुणियों का,
करवाता भान है कहना ऋषि मुनियों का।
सत्ता स्वतंत्र जीवों की नहीं कहीं पर,
कितने ही प्रश्नों के न मिलेंगे उत्तर।
सिद्धान्त आपका अपूर्ण रह जाएगा,
किंचित भी फिर तो पाँव ना बढ़ पाएगा।
इन जीवों का अस्तित्व मान कर चलिए,
इनके गुण–कर्म–स्वभाव जानकर चलिए।
तब छुपा हुआ ईश्वर भी दिख जाएगा,
जो भी रहस्य है सन्मुख खुल आएगा।
जो नहीं जीव को हम अमर मान चलते हैं,
ईश्वर ने पैदा किया जान चलते हैं।
हम उन्हें पूछते हैं क्यों किया बताओ,
क्या कारण था उस कारण को समझाओ।
कारण को तो यह नहीं बता पाते हैं,
शब्दों की बस रचना करते जाते हैं।
क्या पहले से रचना करता आया है,
या वर्त्तमान में ही कर दिखलाया है।
क्या भविष्य में भी करता सदा रहेगा,
या रचना करना कभी बन्द कर देगा।
इसका उत्तर भी हम ही दे सकते हैं,
लेना चाहे वह हमसे ले सकते हैं।।

साभार- वैदिक दर्पण
रचयिता- पण्डित मुन्नालाल मिश्र

समाचार

कोरोना योद्धाओं का हुआ सम्मान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से 'कोरोना पीड़ितों की सहायतार्थ सेवा शिविर' का आज रघुमल आर्य कन्या विद्यालय क्नॉट प्लेस, नई दिल्ली में कार्यकर्त्ता सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस सेवा शिविर में सवा महीने तक प्रतिदिन १०००० निराश्रित मजदूरों, अस्पतालों के बाहर रोगियों के परिजनों, सेवा बस्तियों में निःशुल्क सुबह-शाम भोजन उपलब्ध कराया गया।

कोरोना की दूसरी लहर में कमी आने पर महामारी के विरुद्ध जगकर संघर्ष करने वाले कर्मठ योद्धाओं को सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के सचिव श्री सतीश चड्डा, आर्य नेता श्री सुरेश गुप्ता, सेवाश्रम संघ के मंत्री श्री जोगिंदर खट्टर ने प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया कि जब कोरोना संक्रमण का बोलबाला था। पीड़ित रोगियों से उनके प्रियजन भी दूर हो गए, उन गम्भीर परिस्थितियों में आर्य वीरों तथा समाज सेवियों ने उनके दुःख दर्द को पहचाना और ऑक्सिजन कंसन्ट्रेटर, कोविड टीकाकरण, भोजन तथा पानी जैसी बुनियादी सेवाओं के लिए उनका हर प्रकार से अस्पतालों में सहयोग किया। कोरोना मृतकों के परिजन जिन्हें लावारिस छोड़ गए, उनका भी अन्तिम संस्कार करने में मदद की। इस अवसर पर देश के अन्य राज्यों में भी ऑक्सिजन कंसन्ट्रेटर बैंक की स्थापना की गई। जिससे जरूरतमंद मरीजों को ऑक्सीजन व चिकित्सा सुविधाओं के लिए अभियान प्रारम्भ हुआ ताकि इस भयानक महामारी पर अंकुश लगाया जा सके।

- चन्द्र मोहन आर्य, प्रेस सचिव

Online Admission Open

1. Arya Public Sr. Sec. School (RBSE Affiliated, Aff. No. 1515)- English Medium Co-Education L.K.G. to VIII, Only for Girls IX to XII (Science, Commerce, Arts) Swami Dayanand Marg, Alwar (Raj.) Contact No. 0144-2702980
2. Arya Public Sr. Sec. School (CBSE Affiliated, Aff. No. 1730647)- English Medium Co-Education L.K.G. to VIII, Only for Girls IX to XII (Science, Commerce, Humanities) Malviya Nagar, Alwar (Raj.) Contact No. 0144-2703408
3. Arya Public School (CBSE Pattern)- English Medium Co-Education L.K.G. to VIII, Hasan Kha MewatiNagar, Alwar (Raj.) Contact No. 0144-2732154

४. आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (आर.बी.एस.ई.) कक्षा नसरी से १२वीं तक स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर (राज.) फोन नं. ०१४४-२३३७८५

५. आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (आर.बी.एस.ई.) कक्षा नसरी से १२वीं तक मालवीय नगर, अलवर (राज.) फोन नं. ०१४४-२७०३५६०

६. आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (आर.बी.एस.ई.) कक्षा नर्सरी से १२वीं तक हसन खां, मेवाती नगर, अलवर (राज.) दूरभाष- ०१४४-२७३१७२३

७. आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (आर.बी.एस.ई.) कक्षा नसरी से १२वीं तक रामगढ़ रोड़, गोलेटा, अलवर (राज.) चलभाष- ६३५१२३८६६५

सुविधायें-

१. छात्राओं के लिए छात्रावास।
२. छात्राओं के लिए १० मीटर शूटिंग रेन्ज।
३. सभी प्रकार की सुविधायें।
४. स्मार्ट क्लासेज।
५. आधुनिक एवं वैदिक संस्कार।
६. ७५ वर्षों से आपका भरोसा।
७. विद्यालयों का १०० प्रतिशत (परीक्षा परिणाम)। - प्रदीप आर्य, अलवर

रक्षा बन्धन से चलेगा भारतीय भाषा संस्कृति रक्षा महाभियान- स्वामी प्रणवानन्द

श्रीमद् दयानन्द आर्ष वैदिक गुरुकुल न्यास (परिषद्) के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने रक्षा बन्धन पर्व को भारतीय भाषा संस्कृति रक्षा संकल्प दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया है। आज गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में प्रमुख आचार्यगण, विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि- आप लोग एक-एक भारतीय नागरिक से सम्पर्क कर उन्हें तीन संकल्प दिलवाएँ। पहला भारत का समस्त कार्य भारत की भाषाओं में हो। दूसरा सांस्कृतिक व

आधार भाषा संस्कृत प्रथम कक्षा से कक्षा बारहवीं तक अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाए। तीसरा मानव निर्माण की स्वदेशी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली धीरे-धीरे पूरे देश में लागू की जाए, क्योंकि कठोर कानूनों के रहते, भारी पुलिस के रहते, अनन्त शिक्षण संस्थानों के होते हुए भी अपराध, हत्याएँ, और आत्महत्याएँ बढ़ती ही जा रही हैं, क्योंकि मानव का निर्माण नहीं हो रहा है। मानव का निर्माण चरित्रवान गुरुओं के सान्निध्य में गुरुकुलों में ही हो सकता है। पूरे देश में इसकी जागृति करने के लिए गुरुकुल स्नातकों व देश भक्तों की क्षेत्रवार नियुक्तियाँ की जा रही हैं। २२ अगस्त २०२१ रविवार को रक्षा बन्धन के अवसर पर देश के सभी गुरुकुलों व अन्य शिक्षा संस्थानों में यह संकल्प दिलाकर अभियान के पहले चरण का आरम्भ किया जाएगा। फिर तीन मास तैयारी करके देश के प्रत्येक जिले में प्रदर्शन कर ज्ञापन दिए जाएँगे। प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति से मिला जाएगा। जब तक तीनों बातें लागू नहीं होंगी तब तक संघर्ष बढ़ता जाएगा। - महावीर धीर, अभियान समन्वयक

हलचल

आँखें गई तो लोग बोले – गोवर्धन में छोड़ दो भीख माँग लेगा, देवेन्द्र ने आरएएस बनकर जवाब दिया

सबलपुरा में माला की ढाणी निवासी देवेन्द्र चौहान ने २०१० में अपनी दोनों आँखें एक हादसे में खो दीं। देवेन्द्र ने बताया- आँखों की रोशनी छिनी तो जिन्दगी ही खत्म सी लगी। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। झोपड़ी में रहते थे। बेबसी देख ढाणी के लोग परिजनों से

कहने लगे- इसे गोवर्धन में छोड़ दो, वहाँ भीख माँग गुजारा कर लेगा। तब ठाना कि कुछ कर दिखाएँगे। पढ़ने के लिए ट्रेक्टरों में बजरी की ट्रोलियाँ भर पैसे जुटाए। एक दिन रेडियो सुनते वक्त नेत्रहीनों की संस्था का नम्बर मिला। संस्था का जयपुर में दिव्यांग स्कूल था। वहाँ कम्प्यूटर व ब्रेल लिपि सीखी। तब लगा कुछ कर पाएँगे। अंकिता चौहान व भाई नरेन्द्र सिंह चौहान से किताबों की रिकॉर्डिंग करवाई। उन्हें सुन-सुनकर पढ़ाई की। इस बीच समाज में उपहास, ताने सुन कई बार हिम्मत टूटी, लेकिन निश्चय अटल था। चुपचाप जुटे रहे और आखिर आरएएस- २०१८ में दिव्यांग श्रेणी में चयन होकर दिखाया। देवेन्द्र का कहना है कि उनका अंतिम लक्ष्य आईएएस बनकर सेवा करना है।

जोधपुर में सफलता की आशा, सड़कों पर झाड़ू लगाने वाली अब आरएएस

यह जिदभरी आशा की कहानी है। जोधपुर की सड़कों पर झाडू लगाने वाली निगम कर्मचारी आशा कंडारा का चयन आरएएस- २०१८ में

हुआ है। आठ साल पहले पति से अनबन के बाद दो बच्चों के पालन पोषण की जिम्मेदारी निभाते हुए आशा ने पहले ग्रेजुएशन की। अब आरएएस क्लियर की। परीक्षा के १२ दीन बाद ही उसकी नियुक्ति सफाई कर्मचारी के पद हुई थी। हालांकि नतीजों के लिए दो साल इन्तजार करना पड़ा इस दौरान सड़कों पर झाड़ू निकाली परन्तु हिम्मत नहीं हारी।

अभाव, तकलीफों में जो राह निकाले वो प्रशंसा व पारितोषिक के हकदार हैं, इनकी हौसला अफ़जाई करना ही हमारा मकसद होना चाहिए।

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

कल गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 'वेद विज्ञान मन्दिर' भीनमाल में संचालित महर्षि ऐतरेय महीदास अनुसंधान केन्द्र में तीन ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार पूज्य श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर ३६ वर्षीय ब्रह्मचारी ओम् (पूर्व नाम श्री अंकुर तिवारी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश) डैब डंजी, २१ वर्षीय ब्रह्मचारी रामचन्द्र वेदार्थी (पूर्व नाम रामचन्द्र, जोधपुर) शास्त्री व्याकरण एवं २० वर्षीय ब्रह्मचारी महिव्रत कृष्णराम (पूर्व नाम जॉन स्माइल रिचर्ट बिलियन म्शा, त्रिपुरा) B.Sc 1st year, University of Delhi के संस्कार सम्पन्न हुए। इन तीनों ब्रह्मचारियों ने अपना जीवन वैदिक भौतिकी के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। – कार्यालय सचिव

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
₹100 के स्थान पर अब ₹45 में उपलब्ध
सौ प्रतियाँ लेने पर ₹4000
(डाक खर्च अतिरिक्त)

₹15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०४/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपादेवी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्रीमती संतोष चावला; दिल्ली,श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 13 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर में भव्य दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य संस्कार वीथिका परिसर एवं सुरेश चन्द्र दीनदयाल आर्य चल-चित्रालय का कार्य हुआ सम्पूर्ण।

अब बनेंगे १६ संस्कारों के लाइफसाइज डायरो नोमा। आर्यजन मुक्त हस्त से दान प्रदान करें।

23 जुलाई 2021 को संस्कार वीथिका के भव्य परिसर एवं चलचित्रालय का अवलोकन करते हुए न्यास के संरक्षक द्वय श्री सुरेश चन्द्र आर्य अहमदाबाद, श्री दीनदयाल गुप्त कोलकाता व अन्य न्यासीगण।

इन अत्यन्त सुन्दर तथा प्रेरक प्रकल्पों का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी व दीनदयाल जी के द्वारा दिए गए 4000000 (चालीस लाख) रुपए के दान से एवं श्री गुलाबचन्द कटारिया, विधायक–उदयपुर के द्वारा विधायक निधि से प्रदत्त 1000000 (दस लाख) रुपए के दान से सम्भव हो पाया है।

सुरेश चन्द्र दीनदयाल आर्य चल–चित्रालय में महर्षि दयानन्द के ऊपर बनी फिल्म का अवलोकन करते हुए समस्त न्यासीगण बीच में श्री दीनदयाल जी व श्री सुरेश चन्द्र जी विराजे हुए हैं।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की बैठक में सभी ट्रस्टियों ने सर्वसम्मति से श्री अशोक आर्य जी को अध्यक्ष चुना। इस अवसर पर सभी ट्रस्टीगण एवं आमंत्रित सदस्यों द्वारा श्री अशोक आर्य जी का ओ३म् दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान किया गया। यह चित्र उसी अवसर का है।

आर्यजन उक्त प्रकल्पों का अवलोकन करें, उसके आधार पर न्यास पर विश्वास करें और आगे के प्रकल्पों के लिए मुक्त हस्त से दान करें, यही प्रार्थना है।

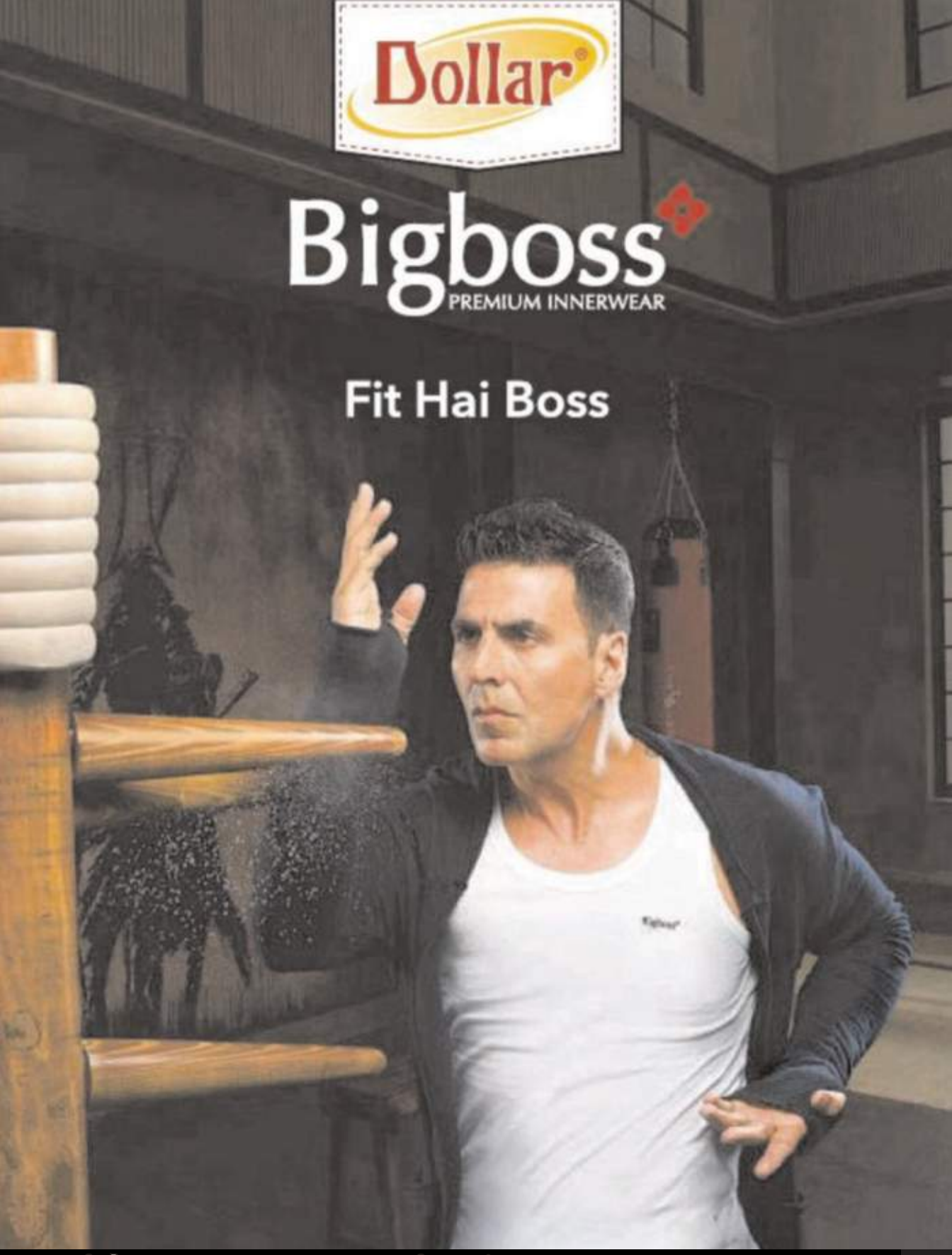
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

कौन देगा महर्षि दयानन्द के तर्क का उत्तर?

जो ईश्वर ने आदम को धूली से बनाया तो उसकी स्त्री को धूली से क्यों नहीं बनाया?..... जो आदम की एक पसली निकालकर नारी बनाई तो सब मनुष्यों की एक पसली कम क्यों नहीं होती? और स्त्री के शरीर में एक पसली होनी चाहिये, क्योंकि वह एक पसली से बनी है। क्या जिस सामग्री से सब जगत् बनाया, उस सामग्री से स्त्री का शरीर नहीं बन सकता था?

- सत्यार्थ प्रकाश, त्रयोदश समुल्लास पृष्ठ ४६७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा मठल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर